हिन्दू चेतना

(पाक्षिक)

E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com

युगाब्द 5116

हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्।
मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।।

2071 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
महादेवजी की बावड़ी पर प्रताप का राजतिलक	5
फारूक अब्दुल्ला के वक्तव्य की निन्दा	6
महामहिम राष्ट्रपति की सेवा में विहिप के	
इंडिया हेल्थ लाईन 'मोबाईल अप'	
'Blod 4 India' लाँच	8
"मैं की यात्रा"	8
शक्ति के अनेक रूपों की साधना	
ही सतयुग का द्वार	9
धोला जंकसनमे राम भगवान की शोभायात्रा	12
परम भागवत श्री पीपाजी	13
धर्मराज युधिष्ठिर	15
जम्मू कश्मीर में हिन्दुओं पर सरकारी	
दमन चक्र - एक चुनौती	19
138 लोग स्वधर्म में लौटे	20
फारूख और उमर अब्दुल्ला के भविष्य	
की राजनीति के संकेत	21
ग्वालियर में पांच स्थानों पर प्याऊ का लोकार्पण	22
धन्यो गृस्थाश्रम	23
युवकों का वर्तमान धर्म राष्ट्रभक्ति	25
श्रद्धाञ्जलि	26

श्रीमद्भगवद्गीता

सप्तमोऽध्यायः

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥१०॥

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥११॥

हे पृथासुअन! तुम यह भली प्रकार समक्ष लो कि सम्पूर्ण प्राणियों का अनादि बीज मैं ही हूँ। बुद्धिमानों में बुद्धि ओर तेजस्वियों में तेज भी मैं ही हूँ।

हे भारवंश में श्रेष्ठ अर्जुन! बलवानों में काम और राग से रहित जो बल होता है, ऐसा बल मैं हूँ। समस्त प्राणियों में धर्म अनुकूल अर्थात् शास्त्र के अनुकूल काम मैं हूँ।

दोहा

तेजस्वी में तेज मैं, बुद्धिमान में बुद्धि।
महापुरुष के तेज से, दुर्जन की भी शुद्धि।
मुझसे ही उत्पन्न सब, प्राणी जगत अनंत।
अर्जुन सब का बीज मैं, जिसका आदि न अंत।

रहित कमनाओं से जो बल-बिनु आसिक्त शुद्ध अरु निर्मल भारतश्रेष्ठ वह क्षमता मैंहूँ-बलवानों में वह बल मैं हूँ काम मनुष्यों में मर्यादित-शास्त्र विहित सज्जन अनुमोदित धर्मयुक्त यदि शुद्ध भाव ही-समझ काम तब मम स्वरूप ही

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्
दिल्ली-110035, दूर : 011-27192504

ज्येष्ठ कृष्ण शुक्ल पक्ष विक्रमी संवत् २०७१
२१ मई से ५ जून २०१४ ई. तक

सूर्य उत्तरायण — गीष्म ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
बुधवार	सप्तमी	धनिष्ठा	८	21	पंचक प्रारंभ, 5-30 से
बुधवार	अष्टमी	00	०	00	क्षय
गुरूवार	नवमी	शतभिषा	९	22	
शुक्रवार	दशमी	पूर्वा भाद्रपद	१०	23	
शनिवार	एकादशी	उत्तरा भाद्रपद	११	24	अपरा एकादशी व्रत
रविवार	द्वादशी	रेवती	१२	25	पंचक समाप्त, 16-18 पर
सोमवार	त्रयोदशी	अश्विनी	१३	26	सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
मंगलवार	चतुर्दशी	भरणी	१४	27	सावित्री चौदस
बुधवार	अमावस्या	कृतिका	१५	28	भावुका अमावस्या, शनि जयंती
गुरूवार	प्रतिपदा	रोहिणी	१६	29	
शुक्रवार	द्वितीया	मृगशिरा	१७	30	
शनिवार	तृतीया	आर्द्रा	१८	31	रम्भा तीज, राणाप्रताप जयंती
रविवार	चतुर्थी	पुनर्वसु	१९	1 जून	
सोमवार	चतुर्थी	पुष्य	२०	2	
मंगलवार	पंचमी	श्लेषा	२१	3	श्रुति पंचमी
बुधवार	षष्ठी	श्लेषा	२२	4	अरण्य षष्ठी
गुरुवार	सप्तमी	मघा	२३	5	पर्यावरण दिवस

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र जनक संवाद)

यदि देहं पृथक्कृत्य चिति विश्राम्य तिष्ठसि।
अधुनैव सुखी शान्तः बंधमुक्तो भविष्यसि॥

अष्टावक्र जी ने कहा, "यदि तू देह को अलग करके और चैतन्य आत्मा में विश्राम करके स्थित है, (अर्थात् अगर तेरा चित्त एकाग्र हो गया है) तो तू अभी, इसी वक्त सुखी, शांत और बंधन से मुक्त हो जाएगा।"

न त्वं विप्रादिको वर्णो, नाश्रमी नाक्षगोचरः।
असंगोऽसि, निराकारो, विश्वसाक्षी सुखी भव॥

"तू ब्राह्मण (क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र) आदि वर्ण नहीं है, और न तू (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास आदि) आश्रमवाला है। न तू आँख आदि इन्द्रियों का विषय है। तू तो निराकार, असंग और विश्व का साक्षी (जगत का द्रष्टा) है। ऐसा जानकर सुखी हो।"

महादेवजी की बावड़ी पर प्रताप का राजतिलक

प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप भारत माता के यशस्वी पुत्र थे, जिन्होंने इसकी स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। उनके सामने कभी भी राज्य सत्ता का सुख लक्ष्य नहीं रहा अपितु जनता का सुख ही उनका सुख बन गया। ऐसे वीर, त्यागी एवं स्वाभिमानी महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक भी गोगूंदा स्थित महादेवजी की बावड़ी पर अनूठे तरीके से हुआ था।

यह वह समय था जब न तो मेवाड़ की राजधानी थी और न ही राज्य का वैभव बचा था। कारण यह था कि चित्तौड़ पर 1568 ई. में अकबर का अधिकार हो गया था और महाराणा उदय सिंह गोगूंदा में रह रहे थे। गोगूंदा के महलों में ही उनका निधन हुआ। वि.सं. 1628 का होली का दिन था, ईस्वी सन् था 1572 तथा दिन था 28 फरवरी का। महाराणा उदय सिंह के अंतिम संस्कार में सभी प्रमुख सामंत व बड़ी संख्या में जनसाधारण उपस्थित थे। मेवाड़ में परंपरा थी कि दिवंगत महाराणा का उत्तराधिकारी दाह संस्कार में सम्मिलित नहीं होता था।

सामंतों ने जब प्रताप को दाह संस्कार में देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ क्योंकि वे महाराणा उदय सिंह के ज्येष्ठ पुत्र होने के साथ-साथ जनमानस में लोकप्रिय युवराज के रूप में ख्याति प्राप्त थे। उनकी माता जयवन्ती थी। कुंभलगढ़ में ही ज्येष्ठ सुदी 3 विक्रम संवत् 1597 (1 मई 1540) को प्रताप का जन्म हुआ था।

सामंतो-सरदारों को बातों ही बातों में जानकारी मिली कि महाराणा उदय सिंह ने अंतिम समय में प्रताप को अपने उत्तराधिकार से वंचित कर दूसरी पत्नी भटयाणी रानी के पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।

रावत कृष्णदास बोले-'तभी तो 'महाराणा' जगमाल उपस्थित नहीं हैं।' इस घटना से सामंतगण दुविधा में थे तभी प्रताप के मामा मानसिंह सोनगरा ने देवगढ़ के सामंत रावत सांगा तथा कृष्णदास जैसे वरिष्ठ सामंतों को इस संकट काल में मेवाड़ की परंपरा के अनुसार उचित निर्णय करने की बात कही।

रावत सांगा ने तुरन्त ऊँची आवाज में कहा-''मेवाड़ के असली हकदार युवराज प्रताप को किस कारण पाटनी (पदवी) से वंचित समझा जाये। उन्हें भी राजगद्दी मिलनी चाहिए।''

युवराज प्रताप उत्तराधिकार का विवाद खड़ा नहीं करना चाहते थे अत: बीच में ही हस्तक्षेप करते हुए प्रताप ने कहा-''आज मेवाड़ ही नहीं पूरे देश में मुगलों का आतंक फैला हुआ है। ऐसे समय में हमें इस प्रकार की बातों से बचकर एकजुट होकर मुगलों से मुकाबले की तैयारी पर विचार करना चाहिए। मुझे तो राजगद्दी की तनिक भी इच्छा नहीं है। मैं तो मातृभूमि का तुच्छ सेवक हूँ। आप सब जगमाल को ही महाराणा रहने दें। मैं उनके साथ मेवाड़ के सिपाही के रूप में बलिदान देने में अग्रणी रहूँगा, किसी भी दृष्टि से आप मुझे पीछे नहीं पायेंगे।''

सभी सामंत युवराज प्रताप के सैन्य अभियानों से तो परिचित थे। अब उनके त्याग एवं मातृभूमि के प्रति स्नेहभरी बातों में सामंतों में नई आशा जागी कि प्रताप के नेतृत्व में ही मेवाड़ अपना खोया वैभव पा सकता है।

दिवगंत महाराणा के दाह संस्कार से निवृत होकर सभी सामंत महादेव जी की बावड़ी के पास बने चबूतरे पर आये। यहाँ सभी की राय जानी गई और अंत में सर्वसम्मति से तय हुआ कि प्रताप का यहीं पर राजतिलक किया जाये। भला प्रताप अब जनमानस एवं सरदारों की एकराय का तिरस्कार कैसे कर सकते थे? उन्होंने भी वह निर्णय स्वीकार कर लिया। वहाँ प्रताप का राजतिलक कर सभी सामंत व सरदार प्रताप के साथ राजमहल पहुँचे। उन्होंने जगमाल को अपदस्थ कर प्रताप को राजगद्दी पर बैठाया।

रावत कृष्णदास ने प्रताप की कमर पर राजसी तलवार बाँध कर तीन बार प्रणाम किया। महाराणा को विधिवत् सम्मान के साथ 'महाराणा प्रताप की जय', 'भगवान एकलिंगनाथ की जय' के नारों से राजमहल गूँज उठा।

शेष पृष्ठ 11 पर.....

फारूक अब्दुल्ला के वक्तव्य की निन्दा

जम्मू 28 अप्रैल, कश्मीर के श्रीनगर संसदीय क्षेत्र से चुनव लड़ रहे नेशनल काफ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अबदुल्ला द्वारा दिए गए वक्तव्य कि- अगर भारत धर्मनिरपेक्ष नहीं रहता तो जम्मू-कश्मीर भारत से अलग हो जाएगा, कश्मीरी साम्प्रदायिकता को बर्दाशत नहीं करते के वक्तव्य पर बवाल मच गया है। इसे लेकर विहिप के संरक्षक डा. रमाकान्त दूबे एवं प्रान्त अध्यक्ष लीलाकरण शर्मा ने इस वक्तव्य पर फारूक अब्दुल्ला को कटघरे में खड़ा करते हुए मुख्य निर्वाचन आयोग से फारूक अब्दुल्ला के राष्ट्रविरोधी वक्तव्य को संज्ञान लेते हुए मामला दर्ज कराने की मांग उठाई है। उन्होंने कहा कि भारत ने जब से आजादी पाई है तभी से यह धर्मनिरपेक्ष है और भारत के संविधान में यह स्पष्ट लिखा है। डा. दूबे ने कहा कि नैशनल काफ्रेंस और कांग्रैस की सांझा सरकार राज्य में रही है परंतु आज तक राज्य के संविधान में धर्मनिरपेक्ष शब्द को नहीं जोड़ पाए हैं। इससे इन पार्टियों के नेताओं की सोच सामने आती है। 1975 में शेख अब्दुल्ला राज्य के मुख्यमंत्री थे उस समय कांग्रैस के 54 विधायकों का सर्मथन भी उन्हें प्राप्त था। फारूक अब्दुल्ला भी राज्य के मुख्यमंत्री रहे उन्हें उस समय धर्मनिरपेक्षता कि याद न आयी जबकि वह भली-भांति जानते है कि राज्य में अल्पसंख्यक कौन है? श्री लीलाकरण शर्मा ने कहा कि फारूक अब्दुल्ला बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय के वोट बटौरने के लिए ऐसा निंदनीय वक्तव्य दे रहे हैं। इस मौन से साफ लगता है फारूख के वक्तव्यों के पीछे कांग्रैस का हाथ है। फारूक ने ही 1987 में राजीव गांधी के साथ समझौता कर कश्मीर में आतंकवाद को हवा दी। उन्होंने फारूक के विरूद्ध मामला दर्ज करने की मांग की। विहिप प्रान्त महामंत्री डा. श्याम लाल गुप्ता, प्रान्त उपाध्यक्ष राजेश कुमार गुप्ता और डा. वी. के. गुप्ता भी पत्रकारवार्ता में उपस्थित थे।

प्रेषक : **राजेश भसीन,** जम्मू

नई दिल्ली अप्रैल 28, 2014। कश्मीर किसी के बाप की बपौती नहीं है। देश के मुकुट कश्मीर को अलग करने की कल्पना मात्र भारतवसियों के लिए असहनीय पीड़ा का विषय है। विहिप दिल्ली के महामंत्री श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव ने केन्द्रीय मंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला के वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि सैक्युलरिज्म का झूठा ढकोसला करने वाले दूसरों पर उंगली उठाने से पहले अपने अंदर झाँका कर बताएं कि क्या पांच लाख कश्मीरी हिन्दुओं को शरणार्थी शिविरों में रहने को बाध्य करना ही सच्ची धर्मनिरपेक्षता है? कश्मीर के अलगाव की कल्पना करने से पहले फारुख स्वयं सोच लें भारत का प्रत्येक नागरिक अपनी भारत माता के इस मुकुट की रक्षार्थ बलिदान देने को तैयार है।

केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला का यह वक्तव्य स्पष्ट रूप से अलगाववाद को हवा दे रहा है। विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली इसकी तीव्र भर्त्सना करते हुए मांग करती है, हालांकि देश की राष्ट्रभक्त जनता तो ऐसे नेताओं को वोट के माध्यम से सबक सिखाएगी ही तथा चुनाव आयोग ऐसे नेताओं का साथ देने वाले दल भी भारत की संप्रभुता पर हमला करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही अवश्य करेगी।

प्रेषक : **विनोद बंसल**
मिडिया प्रमुख, इन्द्रप्रस्थ विहिप

महामहिम राष्ट्रपति की सेवा में विहिप के संरक्षक श्री अशोक सिंहल जी का पत्र

भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी की सुरक्षा के लिए सरकार और राज्य सरकारों के माध्यम से उन्नत, व्यापक और पूर्णत: अभेद्य सुरक्षा प्रणाली तत्काल सुनिश्चित करने के लिए प्रार्थना स्वरूप भेजा जा रहा है। देश की जनता सामान्यत: और उनके समर्थक विशेषत: उन पर किसी आक्रमण की संभावना से चिंतित हैं। सूचना ब्यूरो (आई.बी.) ने श्री मोदी पर संभावित आत्मघाती बम वर्षक के माध्यम से आक्रमण की संभावना को देखते हुए उच्च एलर्ट जारी किया है। इस उच्च एलर्ट के अनुसार उन पर आक्रमण पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी की हत्या की तरह हो सकता है। सूचना ब्यूरो ने यह भी बताया है कि गुजरात के मुख्यमंत्री श्री मोदी पर गोली नहीं चलाई जाएगी और यह आंशका है कि एक "आत्मघाती बम" डालने वाला उन पर ऐसे आक्रमण करे जैसे कि वह उनका समर्थक हो। इस एलर्ट में आक्रमणकारी स्त्री होगी अथवा पुरुष यह नहीं बताया गया है।

इंडियन मुजाहिदिन, पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई और दाऊद इब्राहिम- अपराध समूह डी-कम्पनी का नेता और सन् 1993 में मुम्बई में बमविस्फोट को वित्त पोषित करने वाला और उसकी योजना का मुख्य मस्तिष्क और भारत में सर्वाधिक वांछित अपराधी, जो अब पाकिस्तान में छिपा हुआ है जो अब धोखा-धड़ी, आपराधिक षड्यंत्र के लिए इंटरपोल की वांछित सूची में है और उनके साथ-साथ संगठित अपराध समूह और उनके सहयोगी सब मिलकर श्री नरेन्द्र मोदी की यथास्थान हत्या की योजना बना रहे हैं।

यह खतरा तब से बहुत बढ़ गया है, जबसे श्री नरेन्द्र मोदी ने दाऊद इब्राहिम को भारत में वापस लाने का संकल्प व्यक्त किया है। श्री मोदी ने कुछ दिनों पहले गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे पर प्रचार माध्यमों में वक्तव्य देने मात्र किन्तु दाऊद इब्राहिम के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करने का आरोप लगाया है। गुजराती चैनल 'संदेश' में

एक साक्षात्कार में श्री मोदी ने यह प्रश्न किया कि क्या दाऊद इब्राहिम को भारत में लाने के लिए किसी प्रेस विज्ञप्ति की आवश्यकता है। श्री शिंदे के वक्तव्य जो पाकिस्तान से दाऊद को भारत में वापस लाने के बारे में है, उसके संबंध में प्रश्नों के उत्तर देते हुए श्री मोदी ने कहा "क्या ऐसे काम प्रचार माध्यमों के द्वारा हो सकते हैं? क्या ऐसे कार्यों को समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रसारित किया जाना चाहिए? क्या अमेरिकावासी बिन लादेन से बात करते थे? क्या अमेरिका ने बिन लादेन को खोज निकालने के लिए अपनी योजनाओं के संबंध में कोई पत्रकार वार्ता की? सरकार ने क्या किया है? उनमें न्यूनतम परिपक्वता भी नहीं है।"

मैं इस बात के लिए लज्जित हूँ कि गृहमंत्री ने ऐसे वक्तव्य दिए हैं:-

श्री मोदी द्वारा इतना किए जाने के पश्चात् 'डी-कम्पनी' और इसके साथी श्री मोदी के विरुद्ध अति सक्रिय हो गए हैं और उनकी हत्या करने पर उतारू हैं।

हमारे देश में आतंकवाद पिछले बहुत समय से सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। सरकार को इस चुनौती का सामना आवश्य करना चाहिए और आतंकवादियों/हत्यारों/मारकों को निष्क्रिय करने के लिए व्यापक कार्य योजना बनानी चाहिए और उनके संजाल, सर्मथकों और देश में कार्यरत उनके छिपे हुए अड्डों को समाप्त करने के लिए जोरदार अभियान चलाना चाहिए और वर्तमान प्रसंग में प्रभावी खोजबीन की जानी चाहिए और श्री नरेन्द्र मोदी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सब आवश्यक कदम उठाने चाहिए। ❑

इंडिया हेल्थ लाईन 'मोबाईल अप' 'Blod 4 India' लाँच

कर्णावती (अहमदाबाद) मई 2, 2014। विशेषज्ञ डॉक्टरों से जरूरतमंद मरीजों को प्राईवेट में नि:शुल्क जाँच दिल्ली, हैदराबाद, नागपूर एवं पुणे में इंडिया हेल्थ लाईन द्वारा प्रारंभ करवाने के बाद एक नया एवं उपयोगी जीवन रक्षक सेवा प्रोजेक्ट प्रारंभ किया है।

इंडिया हेल्थ लाईन ने रक्तदान एवं रक्त प्राप्त करने का मोबाईल अप **Blod 4 India** लाँच किया है। **Blod 4 India** प्रारंभ करते हुए डॉ प्रवीण तोगडिया, एम.एस., केन्सर सर्जन, राष्ट्रीय अध्यक्ष इंडिया हेल्थ लाईन एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद ने कहा कि 'अपने स्मार्ट फोन पर क्लिक करो, आपको मिलेगा मोबाईल अप **Blod 4 India** आज से ही एन्डरोईड स्मार्ट फोन पर यह अप-लोड कर सकते हो और उस पर रक्तदाता के नाते पंजीकरण करवाकर रक्तदाता का गौरव प्राप्त कर सकते हो। आवश्यकता पड़ने पर आप, आपका परिवार और मित्रों के लिए रक्त भी प्राप्त कर सकते हो। मेडिकल इमरजेन्सी के लिए राह क्यों देखना? **Blod 4 India** में पंजीकरण करवाकर आवश्यकता पड़ने पर आप के गाँव, तालुका, जिला और शहर में रक्त प्राप्त कर सकते हो। अब तक रक्त की आवश्यकता पड़ने पर हम रक्तदाता ढूंढने निकलते थे, समय पर कभी रक्तदाता मिलते नहीं थे, देरी से मिलते थे। आपको रक्त कौन देगा उनको ढूँढने का काम करेगा **Blod 4 India** मोबाईल अप- वह भी तत्काल।

इंडिया हेल्थ लाईन जगह-जगह पर रक्तदान करवाकर देशभर में अस्पताल एवं रक्तपेढीओं को रक्त देने का काम भी करनेवाली है। अब तक 40000 से ज्यादा बोतलें रक्तदान करवाकर अस्पताल, रक्तपेढीओं में एवं रोगियों को रक्त दिया है।

'रक्त ही जीवन है।' 'रक्तदान जीवनदान है।' **Blod 4 India** में रक्तदान के लिए पंजीकरण करवाने से जीवनदान का आनन्द और पुण्य प्राप्त होगा।

सम्पर्क : कॉल सेंटर : 18602333666

समय : प्रात: 8 बजे से सायं 8 बजे तक

ईमेल : www.indiahealth@gmail.com

फेस बुक : www.facebook.com/Pages/india-health-line/164999770362861

"मैं की यात्रा"

मैं स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास को जन्म देता है, जो किसी भी व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

मैं में जड़ता आने पर हठ धर्मिता एवं अहंकार पैदा हाता है। जो व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है।

मैं की जड़ता को पिघलने की प्रक्रिया है 'स्वाध्याय' जो जिज्ञासा पैदा करता है।

मैं की जिज्ञासा स्वाध्याय के माध्यम से सत्संग की प्रेरणा देता है।

मैं को पिघला कर सत्संग इसे 'मेरा' में बदलता है अर्थात सत्संग से 'मेरा' का जन्म होता है।

मैं से बना हुआ मेरा प्रशिक्षण एवं संस्कार के माध्यम से 'हम और 'हमारा' में परिवर्तित होता है।

थोपा हुआ 'हम' या 'हमारा' मैं को मारता नहीं बल्कि तड़फाता है। विद्रोही बनाता है।

'हम' की सार्थकता के लिए 'मैं' को उपरोक्त यात्रा से ही 'हम' में परिवर्तित करने की क्रिया को पूरा करना चाहिए।

रामकृष्ण श्रीवास्तव
महामंत्री, विहिप दिल्ली, 9555668080

शक्ति के अनेक रूपों की साधना ही सतयुग का द्वार

- धर्मनारायण शर्मा केन्द्रीय मंत्री-विहिप

पिछले अंक से आगे...

आश्चर्य है कि शक्ति का पुजारी भारत आज विश्व की महाशक्तियों में नहीं है। त्रेताकाल व द्वापरयुग में भारत से सच्चे अर्थ में शक्ति की पूजा होती थी। उस काल के अग्रगण्य महानुभावों ने शक्ति तत्व को सच्चे अर्थ में समझा था। इसलिए भारत के पास ब्रह्मास्त्र, नारायणास्त्र, पाशुपतास्त्र जैसे अनेक दिव्यास्त्र थे परन्तु उस काल में देश का नेतृत्व अहिंसा का गलत भाव संजोकर चल रहा था। इस कारण बार-बार कहता था कि हम एटमबम नहीं बनायेंगे। विश्व में आज जो महाशक्तियां गिनी जाती है उसके पास एटम बम से भी अधिक मारक शक्तिशाली बम विद्यमान है इसलिए विश्व के दुर्बल सबल राष्ट्र उनसे दबते हैं। इन हथियारों के कारण वे विश्व की नीतियों का निर्धारण कर रहे हैं और अपने-अपने राष्ट्रों के स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। यह सब शक्तिवान होने का परिणाम है। भारत के पास भी शक्ति तत्व की सभी प्रकार की सामग्री है। एक विशाल जनसंख्या वाला भारत है, श्रेष्ठ वैज्ञानिक भी भारत में विद्यमान है। पर्याप्त थोरियम, यूरेनियम भी भारत की धरा में छिपा हुआ है परन्तु नेतृत्व दुर्बल है। संकल्पी और महत्वाकांक्षी नेतृत्व के अभाव के कारण भारत की गिनती विश्व की महाशक्तियों में नहीं होती है। कस्तूरी मृग की नाभि में रहती है परन्तु मृग उसकी सुगन्ध को इधर-उधर भागकर खोजता है। लगभग भारत की वर्तमान अवस्था भी ऐसी ही बनी हुई है।

इस देश में यदि सच्चे प्रकार से तत्व को समझाकर माँ सरस्वती, लक्ष्मी माता की पूजा होती तो आज भारत की प्रतिभाओं को अपनी अग्रिम शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशों में जाना पड़ता है और जाने का क्रम कभी आरंभ नहीं होता। एक काल में भारत विश्वगुरू था। विश्व के जिज्ञाशु भारत में आकर अपनी जिज्ञासाओं का निवारण करते थे और यहाँ के ज्ञान को लेकर अपने-अपने देशों में जाते थे। जहाँ ऐसे ज्ञानियों का सम्मान इसलिए होता था कि ये भारत से शिक्षित बनकर आएं हैं। यही अवस्था लक्ष्मी के पुजारी भारत की थी। भारत में निर्मित

वस्तुओं की विदेशों में भारी मांग थी। हमारे जहाज हजारों टन भारतीय माल को विदेशों में ले जाते थे। इस कारण भारत में सोने चांदी का अम्बार लगा था। उस काल में भारत की मुद्रा सोने चांदी की हुआ करती थी। विश्व में भारत की मुद्रा का आदर था। हमारे देश के भण्डार धन धान्य से भरे रहते थे। ऐसा धनाडय भारत था। अंग्रेजों की गुलामी के काल में भी मुद्रा की दुर्दशा आज के समान नहीं थी। विभाजन काल में भी हमारी मुद्रा डालर की तुलना में आज के समान घटिया नहीं थी।

आजादी के पश्चात हमारी मौलिकता घटी है और हम दब्बू राष्ट्रों की श्रेणी में आ गए हैं। जब तक सशक्त नेतृत्व भारत को प्राप्त नहीं होता तब तक विश्व में भारत के सम्मान की आशा करना संभव नहीं है। साधनों में कमी नहीं है। श्रेष्ठ विचारों का साहित्य व विचारक भी हमारे पास पर्याप्त है परन्तु इस विचारों को नवीन परिपेक्ष्य में प्रस्तुत करने की जो महत्वाकांक्षा चाहिए उसका अभाव है।

शक्ति तत्व पर कलम चल रही थी। अब शक्ति की पूर्णता हेतु जैसे शस्त्र और शास्त्र पर थोड़ा प्रकाश डाला उसी को आगे बढाते हुए यह कहना होगा कि अकेली शक्ति उच्छृंखल व अत्याचारी भी हो सकती है। शक्ति का लक्ष्य शिव होगा तो वह रचनात्मक बनकर सर्व कल्याण करती हुई अकूत सृजन करेगी, लोकरंजन करेगी। भारत में अर्द्धनारीश्वर के रूप में भगवान का एक रूप प्राप्त है। यह चित्र किस रहस्य का संकेत है? यह संकेत है शक्ति को शिव अंगीकार करना होगा। उसे जीवन की श्रद्धा और सर्वस्व बनाना होगा। जब शक्ति इसे स्वीकार

करेगी तो शक्ति की सार्थकता निर्माण होगी, उसकी पूर्णता भी इसी से होगी।

इसी प्रकार शास्त्रकारों ने 'अग्रत चतुरोवेदा: पृष्ठत: स समरम धनु' कहा है। इस ससरधनुश की सार्थकर्ता चारों वेदों की रक्षा अर्थात श्रेष्ठ विचारों की रक्षा में है। इसको यों भी कहा जाता है कि विचारों की रक्षा अपने ताही संभव नहीं है। जब तक उसकी रक्षा करने वाली शक्ति सन्नद्ध न हो। भारत में विदेशी आक्रमण काल में आक्रमणकारियों की संकुचित साम्प्रदायिक वृत्ति के कारण उन्होंने हमारे अनेक ग्रंथालयों को धू-धू अग्नि में जलाकर खाक कर दिया था। इससे स्पष्ट होता है कि विचारों की सुरक्षा के लिए शक्ति तेज की आवश्यकता है। वेद ब्रह्मतेज व ससंरधनुष क्षात्रतेज के प्रतीक हैं एक ब्रह्म तो दूसरा क्षात्र तेज है। इन दोनों की साधना चलेगी तभी विचारों की सुरक्षा होगी व विचारों का प्रचार प्रसार संभव होगा। एकांगी साधन व पूजा से पूर्ण बल की प्राप्ति संभव नहीं है। नारी व पुरूष के संगम से ही संसार सजता हे। शक्ति व शिव के जुडने से ही सृजन संभव है। मात्र विचार व मात्र शक्ति तक सीमित रहने से सृजन ठहर जाता है। जैसे चातुर्वण में बुद्धि (ब्राह्मण), पुरुषार्थ (क्षत्रीय), पूंजी (वैश्य), श्रम (शूद्र) इनमें से किसी एक से सृजन संभव नहीं है। जब तक चारों बुद्धि, साहस, पूंजी, श्रम मिलते नहीं तब तक कुछ करना, होना संभव नहीं है। विश्व में चारों सभी देशों में विद्यमान है। जो कोई राष्ट्र अपने को प्रगतिशील कहता होगा परन्तु उस राष्ट्रों में भी सृजन के लिए इन चारों का योगदान अनिवार्य दिखाई देता है। उसी प्रकार ब्रह्मतेज व क्षात्र तेज का समन्वय आवश्यक है। यह सदा सत्य रहने वाला सत्य है। मानवी संसार अर्थ, काम में जी रहा हे। जहाँ अर्थ काम है वहाँ संघर्ष भी है, प्रतियोगिता भी है। मनुष्य में अर्थप्राप्ति व संचय की प्रबल कामना है। जब तक यह कामना मानव में रहेगी तब तक छीना-झपटी चली रहेगी। इस अर्थ काम के वशीभूत हुए मानव में संग्रह की वृत्ति है तब तक शान्ति दूर ही रहेगी। आज भी अर्थ काम की कामना के कारण भ्रष्टाचार व दुराचार हो रहा है तथा रात दिन बढ भी रहा है।

इस अर्थ काम की प्राप्ति हेतु विश्व के कुछ देश सत्य, अहिंसा, शान्ति को परे रखकर एकांगी शक्ति तत्व को सहारा बनाकर विश्व को अशान्त करने में लगे हैं। विज्ञान की प्रगति के साथ शक्तिशाली व विनाशकारी शस्त्रों का भण्डारण बढ रहा हे। सभी राष्ट्र क्रमश: अपनी सुरक्षा हेतु विज्ञान के रथ पर बैठकर मारक से मारकतम हथियारों का निर्माण कर रहे हैं। विचार पीछे छूट गया है केवल और केवल विश्व में छा जाने की तुच्छाकांक्षा के कारण संपूर्ण विश्व को भस्मसात कर दें इस प्रकार के शस्त्रें का निर्माण चल रहा है। यह सारा खेल अर्थ काम का है। अर्थ काम के कारण कलियुग प्रबल बनकर रातदिन विस्तार को प्राप्त हो रहा है। यह अर्थ काम आज सृजन का पुरोधा बनने के स्थान पर विनाश का बारूद बन रहा है।

विश्व के विचारवान इस एकांगी कार्यकृति से अत्यन्त चिंतित हैं। सात्विक विचारों को किसी ने अप्रगत तो किसी ने यथास्थितिवादी कहकर नकार दिया है। इसलिए यदि विश्व को बचाना है तो समग्रतापूर्ण विचारों द्वारा सृजन करना होगा। जब तक एकांगी मनोवृत्ति में उलझा विश्व रहेगा तब तक सृजन के साथ विनाश के बीज भी प्रस्फुटित होते रहेंगे। शान्ति की आशा आकाशकुसूम की तरह बनी रहेगी। भयभीत मानव अपनी रक्षा के एकांगी विचारों में बंधकर विनाशकारी शस्त्रों का निर्माण करता रहेगा।

शांति, अर्थ काम को अधिष्ठान बनकर चलने पर कभी भी प्राप्त नहीं होगी। अर्थ काम मात्र भौतिकता का निर्माण करते हैं। स्थूलता से प्राप्त कुछ क्षणों का आनंद अस्थाई के साथ कष्टकारक ही होता हैं भोग को सुख मानकर जीने वालों को स्थाई व घनीभूत सुख कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता है। विश्व के प्रत्येक संतों ने, सच्चे विदवानों ने सुख भौतिकता में है ऐसा न कहकर कहा है कि तुम यदि धनिभूत सुख का आनंद प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने जीवन में भौतिकता से श्रेष्ठ आध्यात्मिकता को प्राथमिकता व उच्चता प्रदान करो।

अर्थ काम को रचनात्मक बनाना है तो धर्म व मोक्ष को आधार बनाओ। धर्म एवं मोक्ष मिलकर ही अध्यात्म बनता है। जहाँ धर्म है वहाँ विवेक, जहाँ धर्म है वहाँ सत्य है, जहाँ धर्म है वहाँ धैर्य है, जहाँ धर्म है वहाँ प्रेम है और जहाँ धर्म है वहीं शान्ति है और अब जहाँ मोक्ष है वहाँ आत्मा परमात्मा है। जहाँ मोक्ष है वहाँ धनिभूत शान्ति है,

जहाँ मोक्ष भाव है वहाँ तप है, वहाँ परमानन्द है इसलिए यदि यह चाह है कि अर्थ काम सृजनकारी बने तो नि:संकोच भाव से धर्म व मोक्ष भाव को धारण करना होगा तभी और तभी अध्यात्म व भौतिकता का समन्वय हुआ यह कह सकेंगे। जहाँ चारों का समन्वय निर्मित हुआ तो संसार कर्मयोगी बनेगा। यह कर्मयोग एकांगी नहीं होकर यह जीवन की उंचाइयों का निर्माण करने वाला बनेगा। जीवन की पूर्णता एकांगिता में नहीं है, जीवन की पूर्णता समग्रता में है। समग्रता का यह दर्शन ही विश्व में बंधुता निर्माण करेगा। इसी समग्रता के कारण कलियुग में भी सतयुग खिल उठेगा।

कलयुग को रोकना होगा। यदि कलि नहीं रूका तो पतन का दौर चलता रहेगा। मानवी विवेक नष्ट होकर पशुता में परिणित हो जायेगा। आचरण की शुद्धता नष्ट होकर भ्रष्टता हावी हो जायेगी। कलि के तरकश में अनेक तीर है जिनका प्रयोग कलि लगातार कर रहा है। इसी कारण उच्चपदों पर बैठे विवेक खोकर जनरंजन के स्थान पर स्वरंजन अर्थात व्यक्ति भाव में स्थित होकर अर्थ काम को सर्वोपरि मानकर, वासना को युगधर्म समझकर कामासक्त की तरह आचरण में रत है। अब कलियुग के मध्य सतयुग का शुभारंभ कैसे होगा यह प्रश्न खड़ा है।

सत्य से ही सतयुग बना है। धर्म के दस लक्षणों में व्यासदेव ने सत्य का भी उल्लेख किया है। सत्यधर्म बने तभी आगे का मार्ग प्रशस्त होगा। सत्य को स्वीकारना व उस पर चलना आसान कार्य नहीं है। सत्य की साधना कठिन साधना है। सत्यवादी हरिश्चन्द्र महाराजा हरिश्चन्द्र सत्य के इस साधना पथ पर आए तो राजपाट छूटा, घर परिवार से बेगाने बने और स्वयंराजपद से उतर कर शमशान की नौकरी करते रहे। स्वयं की पत्नि जो कल तक राजरानी थी वह एक सेठ के घर पर काम करने वाली बनी और जब पुत्र मरा तो अकेली श्मशान पर उसे लेकर आयी। सत्यवादी हरिचन्द्र नोकरी के पशिभूत अपनी पत्नि से कफन मांग रहे हैं ऐसा दुष्कर कष्ट सत्य की पालना पर महाराजा हरिश्चन्द्र को उठाना पड़ा थी। जब तक मानवी भारत प्रत्येक कार्य को सत्यसाधना अनुसार नहीं लेता है तब तक सतयुग का आगमन संभव नहीं है। वैसे भी समय चक्र के अनुसार वर्तमान में बारी कलियुग की है लेकिन यह भी सत्य है कि कलियुग के पश्चात सतयुग पुन: आरंभ होता है।

मनुष्य के आचार विचार, कार्यकृति ही युगों का निर्माण करती है। जब मानव संस्कृतियुक्त बनता है तो स्वाभाविक रूप से एक श्रेष्ठ युग का आरंभ हो जाता है। आचार विचार जब भूषणाभूत या यूं कहें कि श्रेष्ठ कृति वाले बनते हैं तभी युग भी भूषणभूतता को धारण कर सम्यक जीवन व्यवस्था वाला बन जाता है। युग निर्मिति का आधार मानव ही है। एक दो सत्यवादियों के कारण युग निर्माण नहीं होता है। जब तक अधिकतम मानव श्रेष्ठकृति करने वाले नहीं बनते तब तक श्रेष्ण युग संभव नहीं है। हाँ एक दो महानपुरूषों के आगमन से नया वायुमण्डल अवश्य बनता है। यदि एक दो विभूतियां श्रीराम श्रीकृष्ण के समान हों तो वे हस्तियां कलियुग रोककर एक श्रेष्ठ युग का शुभारंभ कर सकती हैं। पर शर्त यह है कि उनके अंदर वे ही कलाएं हों जो श्रीराम व श्रीकृष्ण में थी। इस प्रकार की विभूतियाँ आती तो हैं परन्तु उनके आगमन के पूर्व कुछ श्रेष्ठ महापुरूषों का आगमन हो जाता है। ये श्रेष्ठ विभूतियाँ उन अवतारियों के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करती हैं। यह सब होता है युग की मांग के अनुसार। जब कभी अवतार आए हैं तो उसका कारण था अधर्म का बोलबाला। अत्याचारों में वृद्धि। इस सब प्रकार की परिस्थिति के कारण युग की तड़फन बढ़ती है। इस तड़फन का शमन करने हेतु अवतार होता है। अवतारों का एक ही लक्ष्य होता है धर्म की पुन: प्रतिष्ठा। ❑

.....पृष्ठ 5 का शेष

महाराणा प्रताप ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा–''इस संकट की घड़ी में मेवाड़ के गौरव को पुन: स्थापित करने हेतु सभी प्राण–पण से कटिबद्ध हो जायें।''

बाद में कुंभलगढ़ को अपनी राजधानी बनाकर प्रताप ने राज्य का संचालन किया। आगे चलकर प्रताप के नेतृत्व में उनके सैनिक ही नहीं अपितु सामान्य व्यक्ति भी मुगलों के विरूद्ध अपने प्राणों की बाजी लगाने को आतुर था और मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं करने की उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। (पाथेय कण से)

धोला जंकसनमे राम भगवान की शोभायात्रा

सौराष्ट्र प्रांत के भावनगर जिला का उमराला प्रखंड का धोला जंकसन में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित श्रीराम जन्मोत्सव समिति द्वारा श्रीरामलला की भव्य शोभायात्रा धोला जंकशन में हनुमानदास बापु की वाडी से सौराष्ट्र प्रान्त धर्माचार्य संपर्क प्रमुख गोविंदभाई सतासीयाने तिलक करके श्रीफल के साथ रथ का पुजन करके रथयात्रा को प्रस्थान कराया।

रथयात्रा में वलभीपुर के परम पूज्य संत श्री मुकेश बापु, धोला जंकसन के धनाभगत के महंत बाबुराम बापु, भाव ग्राम मंत्री श्री वंशराम भगत, गोविंदभाई सतासीया सहित शोभायात्रा में पालीताणा प्रखंड एवं उमराल प्रखंड के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। शोभायात्रा में आकर्षक फलोट कपिल मुनि के आश्रम में सगर राजा के साठ हजार पुत्र जल कर भस्म हो गये जिनके मोक्ष के लिये असुंमान, दिलीप, भगीरथ राजा ने जैसे तीन पीढी ने कठोर तपस्या करके पतित पावनी माँ गंगा को धरती पर लाकर फलोट टेक्टर में भगवन भोलानाथ विशाल जटा बनाकर क्रोधपूर्ण मुद्रा में खड़े सिर पर 1.5 फीट उच्चे रहके दुर्गावाहिनी की बहन गंगास्वरूप माता अविरल जमीन से 15 फुट ऊँचे गंगा अवतरण फलोट और राम लक्ष्मण जानकी एवं हनुमान का स्वरूप दुर्गावाहिनी की बहनों ने धारण किया और नव दुर्गा स्वरूप ने नव दुर्गावाहिनी कुमारी ने आकर्षक बनाया। यात्रा के मध्य में आंबालाकी वाकीया हनुमान जी की जग के महंत श्री रवुबापु ने रामरथ की आरती की और रथ यात्रा में सम्मिलित होकर प्रसाद वितरण किया। समापन में यात्रा हनुमानदास बापुकीवाडी, केसवानंद आश्रम, सरस्वती चौक, रामजी मंदिर एस.बी.आई, चौक, मुख्य मार्ग से होकर भावेश्वर महादेव मंदिर में धर्मसभा होकर पूर्ण हुई। यात्रा में जिला बजरंगदल संयोजक अशोकभाई आहीर, प्रखण्ड अध्यक्ष रीतेशभाई व्यास, मंत्री वीरलबाई पंडया बजरंगदल प्रखण्ड आयोजक, परेशभाई केरासीया एवं कौशीक भाई, राजेश भाई, गिरीश भाई, पेथाभाइ आहीर और गोपालभाई दवे मीठाइवाला और अन्य कार्यकर्ताओं के प्रयासों से यात्रा सफल हुई। यात्रा पूर्ण होने के बाद गुंदी और गांडीयाना का प्रसाद वितरण किया गया।

प्रेषक : **गोविंदभाई सतासीया**
सौराष्ट्र प्रांत धर्माचार्य संपर्क प्रमुख

दुःख और उनसे मुक्ति का उपाय

योगदर्शन में महर्षि पतंजलि दुःखों का कारण अविद्या (अज्ञान) बताते हैं- तस्य हेतु विद्याा तथा उससे छुटने का उपाय क्रिया योग को बताते हैं। क्रिया योग- तपः स्वाध्यायः ईश्वरप्राणिधानानिक्रिया योगः अर्थात् अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम (तपः), अज्ञानान्ध्कार के नाश हेतु आर्ष (सद्) ग्रन्थों का पठन-पाठन (स्वाध्यायः) तथा परमपिता से सद्बुद्धि प्राप्ति हेतु पूर्ण समर्पण सहित उपासना (इश्वरप्रणिधानः) का आचरण करते हुए हम दुःखों से मुक्ति पा सकते हैं।

परम भागवत श्री पीपाजी

-तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशाचार्य ''अच्युत''

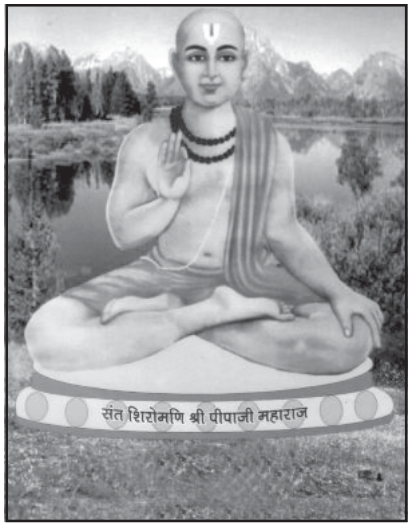

उत्तम भारत की रम्य देवभूमि में समय-समय पर युगानुरूप युग पुरुष, ऋषि मुनि, महापुरुष-महात्मा एवं युग परिवर्तक-धर्म प्रवर्तक, ईश्वरीय शक्ति का साकार होकर अवतार, सन्त-साधु सदैव नित्यावतार-निमित्तावतार स्वरूप में आते रहे है और धर्म स्थापना, आचार-संहिता का जीर्णोधार, सत्पुरुष-सात्विकता की वाणी और पाणी से रक्षा का दायित्व निभाते है एवं अधर्म-अत्याचार पूर्ण विकर्म-अकर्म का संहार, दुष्टता लिये आसुरी सम्पत्ति के निराकरण की भूमिका निर्वाह करते हुए आलोक प्रदान कर गये, किन्तु अपूर्व कीर्ति मधुरिमा की अमर छाप छोड़कर चले जाते है।

वे खुद ही तय करते है, मंजिल आसमान की।
परिन्दों को नहीं दी जाती, तालीम नभ उड़ानों की॥
रखते है जो हौसला, आसमां छूने का।
उनको नहीं परवाह, कभी गिर जाने की।
हम चले तो आँधियां तूफान खुद ही चल पड़ेंगे।
सागरों की बात क्या है, हिमगिरी भी चल पड़ेंगे॥
ये दिशाऐं पथ हमारा, रोक लेगी पथ स्वयं चल पड़ेंगे।
हम चले तो दीप क्या, सूरज हजारों चल पड़ेंगे।

ऐसे ही इतिहास के अमर ज्योतिर्मान आकाशीय नक्षत्र दिवाकर के समान युग प्रणेता श्री वैष्णव सनातन धर्मोद्धारक आर्य-हिन्दू धर्म रक्षक जगद्गुरु आद्य स्वामी रामानन्दाचार्यजी (वि.सं. 1356 से वि.सं. 1515) का अपूर्वता लिये अद्वितीय प्रभाव का प्रादुर्भाव रहा, जो मानव कुरीति निवारक, समाज शुद्धिकारक, अछूतोद्धारक, नारी कल्याणक, वेदान्त सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत के साथ निर्गुण-सगुण, भक्ति-योग, लयचिन्तन एवं व्यवहारिक-पारमार्थिक जीवन-प्रेरक, राष्ट्र हितकारी शक्ति के सृजेता रहे। आप के अनेकानेक युग प्रभावी देवावतार के मानव आकृति में अवतरण लिये अनन्तानन्द, रैदास, कबीर, धना, पीपा, सेना इत्यादि द्वादश भागवत शिष्य महापुरुषों ने कलि के आक्रान्त स्वरूप विदेशी शासन तन्त्र की यातनाओं से तृसित सनातन-हिन्दु धर्मपालक वर्ग का रक्षण कार्य किया और अपने अन्तिम कार्य में परम सन्त शिष्यों को आदेश दे गये कि-''समस्त शास्त्रों का सार भगवत्स्मरण है। यही सन्तों का जीवन आधार है। शिखा व सूत्र के आधार पादज और अन्त्यज है। भाई! पैरों को काटकर समाज को पंगु मत बनाना, समर्थ बने-बनायें रहना। आप श्री वैष्णव धर्म के सम्प्रदाय के आचार्य तथा प्रवर्तक पद अर्थात् प्राचीन समुदाय सिद्धान्त का संशुद्धिकारक संगठित समाज का शंखनाद बजाया।

ऐसे सिद्ध काल में भारत की रमणीय सिद्ध भूमि, भक्ति सृजिता राजस्थान प्रान्त में कोटा-बून्दी के पास गागरोन गढ़ के शासनाध्यक्ष राजा कडवाराव (कोधसिंह जो सन्त समाज में बप्पा के नाम से विख्यात थे) चौहान के घर वि.सं. 1380 चैतसुदि पूर्णिमा बुधवार तदानुरुप सन् 23 अप्रैल 1323 ई. को ज्येष्ठ पुत्र का अवतरण हुआ। जिनको पीपाराव (राव बप्पा) के नाम से सम्बोधन मिला।

सांसारिक जीवों-मनुष्यों का जन्म होता है और निधन हो जाता है। किन्तु युगपुरुष महाशक्तिवान देवत्व लिये सन्तों-तत्वदर्शी जनों का अवतरण होता है और उन की अन्य जीवों-मनुष्यों के समान मृत्यु नहीं होती। वे अपने कार्यकाल में यथोचित समाजोत्थान के चरित्रोत्थान दिग्दर्शन करके लीला संवनमयी तपोरूप साधना में धैर्य, क्षमा, उदार, वीरोचित्त साहस लिये सर्वोच्च शक्ति अद्वय का परिचायक होकर साकेतवास् ब्रह्मलीन होते हैं। इतिहास पुरूषों का जीवन सर्वदा संघर्षमयी, परिश्रमशील, परम पुरुषार्थ का परिचायक होता है।

ऐसे ही महामानव जीवन में सद्गुणानुरुप शिक्षा-दीक्षा में धार्मिक संस्कारों से राजनीति, धर्म-शासन नीति, वीरोचित

अस्त्र-शस्त्र, सामाजिक न्याय, कौशल्य के ज्ञान का विकास पूर्व संस्कारवान होने से स्वाल्पकालीन व्यवस्था में सम्पन्न हुआ। पिताश्री के साकेताधिय पश्चात् वि.सं. 1400 (सन् 1343 ई.) में आपका राज्याभिषेक हुआ। तदन्तर गागरौन गढ़ पर एक से एक विपत्ति के पहाड़ टूटते हुए विधर्मी आतंककारियों द्वारा विभिन्न पैशाचिक शक्तियों द्वारा कई आक्रमण हुए, जिसे युद्ध कौशल एवं वीरोचित ललकार से पराभूत कर विजय स्तम्भ की जययुत विजयकीर्ति का धर्मध्वज लहराता रहा।

आपके गृहस्थ जीवन में बारह राशियों का बाहुल्य होते हुए भी ऐसे पुण्यात्मा का अभाव रहा कि पीपाजी के घर में बालक रूप से आ सके अर्थात् सन्तान नहीं होने पर आपका अन्तिम विवाह वि.सं. 1410 (1353 ई.) में टोडाराय सिंह नगर में वि.सं. 1394 (सन् 1337) को जन्मी राणी सीता से हुआ जो पतिपरायणा, आदर्श नारी, ईश्वरीय गुणों से ओत-प्रोत पातिवत्य गुण पूरित, उज्ज्वल चरित्रा थीं। महाराज ने देवी पूजा ईष्ट-सेवा की प्रतिज्ञा कर रखी थी और उनके जीवन पर देवी भक्ति का रंग पक्का चढ़ा हुआ था। भवानी देवी के दृढ़ उपासक होने से प्रतिमाह देवी प्रसाद में चालीस मन अन्न का भोग लगाया जाता था। एक बार नगर में विरक्त वैष्णव साधुओं की प्रचार मण्डली आई राजा ने यथोचित सेवा-सत्कार किया और कहा आज देवी को चालीस मन के अन्न का भोग लगाया है, सभी लोग प्रसाद ले रहे है। आप भी सब मिलकर सन्त मण्डली प्रसाद ले लो। साधुजनों ने कहा-हमारे साथ श्री ठाकुर पूजा है, हम उन्हीं को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण करते है, दूसरे अन्य देव देवी का प्रसाद नहीं लेते है। राजा द्वारा यद्यपि देवी को बढ़िया से बढ़िया व्यंजनों का भोग लगाये जाते थे। किन्तु श्री वैष्णव सन्तों में वैसी आस्था नहीं होने से राज्यादेश से साधु मण्डल को साधारण सीधा चून दाल आटा का सामान दिलवा दिया। साधुओं ने भी घी शक्कर की कोई इच्छा मांग नहीं की, क्योंकि सन्त भाव के भूखे एवं भक्ति पारायण होते हैं। यथा-

वैराग्यं परमं भाग्यं सन्तोषं परम धनम्।
विश्वासं परमं मित्रं निर्द्वन्दं परम सुखम्॥

साधु भूखे भाव के, अन्न को भूखे नाहि।
अन्न-धन भूखे जो रहे, वह तो साधु काहि॥

साधु-मण्डली ने प्रसाद बनाकर प्रभु को भोग लगाया और मन ही मन से प्रार्थना की-हे अन्तर्यामी! राजा को सद्बुद्धि देकर अन्य देवी देव से बचाकर ईश्वर भक्ति की सद्प्रेरणा प्रदान करें और प्रभुभक्त बना दें। प्रभु-प्रसाद को भाव सहित सन्तों ने ग्रहण किया। रात को जब राजा पीपाराव महल में सोये तो एक बड़ा भयानक स्वप्न देखने में आया कि एक विशाल देहधारी प्रेत ने राजा को उठाकर पटक दिया और मारने लगा। राजा की आँख खुली, भयभीत राजा रोने लगे, मनन-चिन्तन किया। राजा को संसार से राम के भाव जगे। वैराग्य हो गया और संसार का कोई सुख-ऐश्वर्य अच्छा नहीं लगा। उन्होंने माँ भवानी का ध्यान किया। देवी ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर सत्य वचन से कहा-कहो? राजा ने मुक्ति मांगने की प्रार्थना की तब देवी ने कहा-''मुक्ति देने का सामर्थ्य मेरे में नहीं है। वह तो परमात्मा में है, उनकी शरण में जाने की दृढ़ साधना होगी तब तो सम्भवतया हो, ऐसा वेद शास्त्र और सन्तों ने बताया है।'' देवी के आदेशानुसार आपने वि.सं. 1414 गुरुपूर्णिमा (1357 ई.) को ज.गु. आद्य स्वामी रामानन्दाचार्यजी से श्री वैष्णव धर्म दीक्षा ग्रहण की। मन्त्र दीक्षा द्वारा परम गुरुदेव ने अनुग्रह प्राप्त किया। राणी ने दीक्षा लेकर पदमावती का सम्बोधन पाया। राजा ने सन्तान नहीं होने से अपने भतीजे कल्याणराव को राज्य देकर वैराग्य ग्रहण किया। गुरुदेव ने आज्ञा दी कि अपने घर में रहकरके साधु-सन्तों की सेवा और नाम जप की साधना करे। गुरु आज्ञा का पालन करके आप गगारोन गढ़ में रहकर राज्य कोष का अन्न नहीं खाने का प्रण किया और पीपाजी एवं पदमावती ने वस्त्र सिलाई से एक वर्ष तक आजीविका करते हुए जिन-जिन सती सेवक भक्तों को काम एवं नाम की दीक्षा देने का उपकार किया, वही पीपा क्षत्रीय, दर्जी एवं पीपावत साद के विभिन्न परिवार नाम से श्री वैष्णव परिवार का संवर्धन प्रचारित हुआ। वर्षान्तर आप विरक्त भाव से सन्त मण्डली में संत गुरु सानिन्ध्य में रहकर भू-भ्रमण करते हुए अपनी सुदृढ़ भक्ति-ज्ञान साधना में रहने लगे।

आपकी जीवन वृत कथा का वृतान्त भक्तमाल (नामाजी), प्रियदासजी एवं ऐतिह्य सामग्री का विशाल

शेष पृष्ठ 18 पर.....

धर्मराज युधिष्ठिर

-श्री मोहन जोशी, केन्द्रीय मंत्री, वि.हि.प.

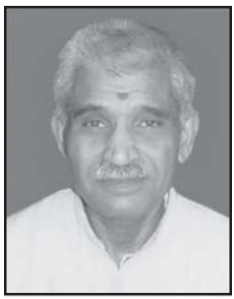

गतांक से आगे.....

युधिष्ठिर यक्ष संवाद

महाराज युधिष्ठिर बड़े भारी बुद्धिमान्, नीतिज्ञ और धर्मज्ञ तो थे ही, उनमें समता भी अदभुत थी। एक समय यक्ष ने इनके चारों भाइयों को अपनी अवज्ञा होने के कारण मार दिया। जब युधिष्ठिर उस तालाब के किनारे पहुंचे और अपने सब भाइयों को मरा हुआ देखा तो उन्हें अत्यन्त दु:ख हुआ। उन्होंने यक्ष द्वारा पूछे गए निम्न प्रश्नों के उत्तर देकर यक्ष को संतुष्ट किया।

यक्ष - असत् पुरुषों का सा आचरण क्या है?

युधिष्ठिर - किसी की निन्दा करना तथा शरण में आए हुए दु:खियों का परित्याग कर देना असत्पुरुषों का सा आचरण है।'

यक्ष - श्वास लेते हुए भी मृत कौन है?

युधिष्ठिर - जो देवता, अतिथि, पालन करने योग्य कुटुम्बीजन, पितर और आत्मा-इन पांचों का पोषण नहीं करता, वह श्वास लेता हुआ भी जीवित नहीं है।

यक्ष - पृथ्वी से भी भारी क्या है? आकाश से भी ऊंचा क्या है? वायु से भी तेज चलने वाला क्या है? और तिनकों से अधिक (असंख्य) क्या है?

युधिष्ठिर - माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है। पिता आकाश से भी ऊंचा है। मन वायु से भी तेज चलने वाला है और चिन्ता तिनकों से भी अधिक असंख्य एवं अनन्त है।

यक्ष - धर्म का मुख्य स्थान क्या है? यश का मृत्यु स्थान क्या है? स्वर्ग का मुख्य स्थान क्या है? और सुख का मुख्य स्थान क्या है?

युधिष्ठिर - धर्म का मुख्य स्थान दक्षता है, यश का मुख्य स्थान दान है, स्वर्ग का मुख्य स्थान सत्य है और सुख का मुख्य स्थान शील है।

यक्ष - किस वस्तु का त्याग कर मनुष्य प्रिय होता है? जिसको त्याग कर शोक नहीं करता? किसको त्याग कर अर्थवान् होता है? और जिसको त्याग कर सुखी होता है?

युधिष्ठिर - अभियान को त्याग कर मनुष्य प्रिय होता है, क्रोध को त्यागकर शोक नहीं करता, काम को त्याग कर वह अर्थवान होता है और लोभ को त्याग कर सुखी होता है।'

यक्ष - मनुष्य मित्रों को किसलिए त्याग देता है? और स्वर्ग में किस कारण नहीं जा पाता?

युधिष्ठिर - लोभ के कारण मनुष्य मित्रों को त्याग देता है और आसक्ति के कारण स्वर्ग में नहीं जा पाता?

यक्ष - तप क्या है? दम किसे कहते हैं? उत्तम क्षमा क्या है? लज्जा किसे कहते हैं?

युधिष्ठिर - अपने धर्म में तत्पर रहना तप है, मन के दमन का नाम ही दम है, सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्वों को सहन करना ही क्षमा है और न करने योग्य काम से दूर रहना लज्जा है।

यक्ष - ज्ञान किसे कहते हैं? शम क्या है? उत्तम दया किसका नाम है? और सरलता किसे कहते हैं?

युधिष्ठिर - परमात्म-तत्व का यथार्थ बोध ही ज्ञान है, चित्त की शान्ति ही शम है, सबके सुख की इच्छा रखना ही उत्तम दया है और समचित्त होना ही सरलता है।

यक्ष - मनुष्यों का दुर्जय शत्रु कौन है? अनन्त व्याधि क्या है? साधु कौन माना जाता है? और असाधु किसे कहते हैं?

युधिष्ठिर - क्रोध दुर्जय शत्रु है, लोभ अनन्त व्याधि है तथा जो समस्त प्राणियों का हित करने वाला ही साधु है और निर्दयी पुरुष को ही असाधु माना जाता है।

यक्ष - अक्षय नरक किस पुरुष को प्राप्त होता है?

युधिष्ठिर - जो पुरुष भिक्षा मांगने वाले दरिद्री ब्राह्मण को स्वयं बुलाकर उसे भिक्षा नहीं देता है तथा जो पुरुष वेद, धर्मशास्त्र, ब्राह्मण, देवता और पितृ-धर्मों में मिथ्या बुद्धि रखता है, अक्षय (कभी नाश न होने वाले) नरक में जाता है। धन पास रहते हुए भी जो लोभवश दान

और भोग से रहित है तथा (मांगने पर ब्राह्मणादिकों को एवं न्यायमुक्त भोग के लिए स्त्री-पुत्रादि को) कह देता है कि मेरे पास कुछ नहीं है वह अक्षय नरक में जाता है।

यक्ष - ब्राह्मणत्व का मुख्य हेतु क्या है?

युधिष्ठिर - तात यक्ष! न तो वंश ब्राह्मणत्व में कारण हैं, न स्वाध्याय और न शास्त्र-श्रवण। ब्राह्मणत्व का हेतु सदाचार ही है, इसमें संशय नहीं है। इसलिए प्रयत्नपूर्वक सदाचार की ही रक्षा करना चाहिए, जिसका सदाचार नष्ट हो गया, वह तो स्वयं ही नष्ट हो गया। पंडित तो वही है जो अपने शास्त्रोक्त कर्तव्य का पालन करता है। चारों वेद पढ़ा होने पर भी जो दुराचारी है, वह शूद्र से भी बढ़कर अधम है। जो अग्निहोत्र में तत्पर और जितेन्द्रिय है वही ब्राह्मण कहा जाता है।

यक्ष - सुखी कौन है? आश्चर्य क्या है? मार्ग क्या है और वार्ता क्या है?

युधिष्ठिर - जिस पुरुष पर ऋण नही है और जो परदेश में नहीं है, वह भले ही पांचवे या छठे दिन अपने घर के भीतर साग-पात ही पका कर खाता हो तो भी सुखी है।

संसार में प्राणी प्रतिदिन यमलोक को जा रहे हैं किन्तु जो बचे हुए हैं वे सर्वदा जीते रहने की इच्छा करते हैं इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या होगा?

तर्क की कहीं स्थिति नहीं है श्रुतियां भी भिन्न-भिन्न हैं, एक ही ऋषि नहीं है कि जिसका मत प्रमाण माना जाय तथा धर्म का तत्व गुफा में छिपा हुआ है अर्थात् अत्यन्त गूढ़ है, अतः जिस मार्ग से महापुरुष जाते रहे हैं वही मार्ग है।

इस महामोह रूपी कड़ाहे में भगवन काल समस्त प्राणियों को मास और ऋतु रूप करछी से उलट-पुलट कर सूर्यरूपी अग्नि और रात-दिन रूपी ईधन के द्वारा रांध रहे हैं, यही वार्ता है।

यक्ष - पुरुष कौन है और सबसे बड़ा धनी कौन है?

युधिष्ठिर - जिस व्यक्ति के पुण्य कर्मो की कीर्ति का शब्द जब तक स्वर्ग और भूमि को स्पर्श करता है, तब तक वह पुरुष कहलाता है।

जो मनुष्य प्रिय-अप्रिय, सुख-दुःख और भूत-भविष्यत् इन द्वन्द्वों में सम है, वही सबसे बड़ा धनी है। जो भूत, वर्तमान और भविष्य सभी विषयों की ओर से इच्छारहित, शान्त-चित्त, सुप्रसन्न और सदा योगयुक्त है, वही सब धनियों का स्वामी है।

अन्त में यक्ष ने प्रत्यक्ष होकर कहा कि 'तात युधिष्ठिर! मैं तुम्हारा जन्मदाता पिता धर्म हूँ। यश, सत्य, दम, शौच, सरलता, लज्जा, अचंचलता, दान, तप और ब्रह्मचर्य-ये सब मेरे ही शरीर हैं। अहिंसा, समता, शान्ति, दया और अमत्सर डाह न होना-इन्हें मेरे पास पहुँचने के द्वार समझो। जो मनुष्य मेरे भक्त हैं, उनकी कभी दुर्गति नहीं होती। मैं तुमसे प्रसन्न हूं।

राजन्! अपने इन भाइयों में से किसी एक को, जिसे तुम चाहो, मैं जीवित कर दूंगा। धर्मराज ने नकुल को जीवित कर देने की प्रार्थना की। कारण पूछने पर उन्होंने बतलाया कि मैं अपनी दोनों माता कुन्ती और माद्री को समान पुत्रवती बने रखना चाहता हूं। कुन्ती का पुत्र तो मैं मौजूद हूं ही, मैं चाहता हूं कि माद्री का भी एक पुत्र बचा रहे। इसलिए मैंने भीम और अर्जुन को छोड़कर नकुल को जिलाने की प्रार्थना की है। वे युधिष्ठिर की इस अद्भुत समता को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उनके सब भाइयों को जीवित कर दिया।

युधिष्ठिर जैसे सदाचार-सम्पन्न थे, वैसे ही विनयी भी थे। वे समयोचित व्यवहार में बड़े कुशल थे, गुरुजनों की मान-मर्यादा का सदा ध्यान रखते थे। कठिन से कठिन समय में भी वे शिष्टाचार की मर्यादा को नहीं भूलते थे। महाभारत युद्ध के प्रारंभ में, जब दोनों सेनाएं युद्ध के लिए तैयार खड़ी थीं, उस समय ये सबसे पहले अपने हथियारों को रखकर शत्रु सेना में गए और पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण एवं कृपाचार्य तथा मामा शल्य के चरणों में प्रणाम करके उन सबका आशीर्वाद प्राप्त किया। उन सबने उनकी हृदय से विजय कामना की।

महाराज युधिष्ठिर की सत्यवादिता प्रसिद्ध थी। सब जानते थे कि युधिष्ठिर भय अथवा लोभवश कभी असत्य नहीं बोलते। उनकी सत्यवादिता का ही फल था कि उनके रथ के पहिए सदा पृथ्वी से चार अंगुल ऊंचे रहा करते थे। जीवन में केवल एक बार उन्होंने असत्य भाषण किया। इन्होंने द्रौणाचार्य के सामने अश्वत्थामा नामक

हाथी के मारे जाने के बहाने झूठमूठ यह कह दिया कि अश्वत्थामा मारा गया। इसके फलस्वरूप इनके रथ के पहिये पृथ्वी से सटकर चलने लगे और इन्हें मुहूर्त भर के लिए कल्पित नरक का दृश्य भी देखना पड़ा।

इनकी उदारता भी अलौकिक थी। कौरवों से ये सिर्फ पांच गांव लेकर सन्धि करने को तैयार हो गए। लेकिन दुर्योधन ने कहा कि सुई की नोंक के बराबर भूमि भी देना मुझे स्वीकार नहीं। **विनाश काले विपरीत बुद्धिः**। अतः न चाहते हुए भी बाध्य होकर ही युद्ध छेड़ना पड़ा था। इतना ही नहीं, जब दुर्योधन की सारी सेना मर-खप गयी और वह एक तालाब में जाकर छिपा रहा, तब उसके पास जाकर उसे युद्ध के लिए ललकारते हुए यहां तक कह दिया कि-हम में से किसी एक भाई पर भी तुम द्वन्द्व युद्ध में विजय प्राप्त कर लोगे तो सारा राज्य तुम्हारा हो जायेगा। यह उदारता की सीमा थी। अन्त में भीमसेन ने उसे गदा युद्ध में मार गिराया।

धर्मराज युधिष्ठिर का आश्रय लेकर सब लोग उसी तरह सुख से रहने लगे जैसे जीवात्मा पुण्य कर्मों के फलस्वरूप अपने उत्तम शरीर को पाकर सुख से रहता है। प्रजा ने राजा युधिष्ठिर के रूप में ऐसा राजा पाया था जो परम ब्रह्म का चिंतन करने वाला, बड़े-बड़े यज्ञों को करके शुभ लोकों का संरक्षण करने वाला एवं प्रजा का पुत्रवत् पालन करने वाला था।

युधिष्ठिर समस्त धर्मात्माओं में श्रेष्ठ थे। वे सारी प्रजा पर आग्रह करके सबका समान रूप से हित साधन करने लगे। उनका ऐसा व्यवहार देखकर सारी प्रजा उनके ऊपर पिता के समान विश्वास रखने लगीं। उनके प्रति द्वेष रखने वाला कोई नहीं था। इसीलिए वे अजातशत्रु नाम से प्रसिद्ध हुए। सदा धर्म में तत्पर रहने वाले युधिष्ठिर के शासनकाल में रोग तथा अग्नि का प्रकोप आदि कोई भी उपद्रव नहीं हुआ। लुटेरों से, ठगों से, राजा के प्रिय व्यक्तियों से प्रजा के प्रति अत्याचार या मिथ्या व्यवहार भी नहीं सुना जाता था और आपस में भी सारी प्रजा एक-दूसरे से मिथ्या व्यवहार नहीं करती थी। राजा युधिष्ठिर की ख्याति सर्वत्र फैल रही थी। सभी सद्गुण उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। वे शीत एवं उष्ण आदि सभी द्वन्द्वों को सहने में समर्थ तथा अपने राजोचित गुणों में सर्वत्र सुशोभित होते थे।

राज्याभिषेक हो जाने पर धृतराष्ट्र और गांधारी के साथ ऐसा सुन्दर बर्ताव किया कि वे अपने पुत्रों की मृत्यु का भी दुःख भूल गये। युधिष्ठिर से उन्हें इतना सुख प्राप्त हुआ जितना अपने पुत्रों से भी नहीं हुआ था। युधिष्ठिर सारा राजकाज उन्हीं से पूछ-पूछकर करते थे और राजकाज करते हुए भी इनकी सेवा के लिए बराबर समय निकाला करते थे। वे उन्हें आवश्यकतानुसार यथेष्ट धन देते थे। जिन धृतराष्ट्र के कारण पाण्डवों ने भारी से भारी विपत्तियां झेलीं, द्रौपदी का अपमान हुआ, जिन्होंने उन्हें पाँच गाँव देना भी स्वीकार नहीं किया, जिनके कारण इतना भीषण नरसंहार हुआ-उन्हीं धृतराष्ट्र के प्रति इतना निश्छल प्रेम भाव रखना और अन्त तक उन्हें सुख पहुँचाने की पूरी चेष्टा करना युधिष्ठिर जैसी महान् आत्मा का ही काम था। बैरी के प्रति ऐसा उत्तम व्यवहार विश्व के इतिहास में और कहीं देखने को नहीं मिलेगा।

श्री कृष्ण के परमधाम गमन की बात सुनकर अपने पौत्र परीक्षित को राजगद्दी पर बिठलाकर अपने चारों भाई तथा द्रौपदी को साथ लेकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते हुए हिमालय को पार कर वे मेरु पर्वत की ओर बढ़ रहे थे। मार्ग में देवी द्रौपदी तथा इनके चारों भाई एक-एक करके क्रमशः गिरते गए। इनके गिरने की भी परवाह न कर युधिष्ठिर आगे बढ़ते ही गए। इतने में ही स्वयं देवराज इन्द्र रथ पर चढ़कर इन्हें लेने के लिए आए और रथ पर चढ़ने को कहा। परन्तु इनके साथ एक कुत्ता भी था, जो प्रारम्भ से ही इनके साथ चल रहा था। युधिष्ठिर ने चाहा कि वह कुत्ता भी साथ चले। इन्द्र की आपत्ति पर इन्होंने स्पष्ट कह दिया-इस स्वामिभक्त कुत्ते को छोड़कर मैं अकेला स्वर्ग जाने को तैयार नहीं।

यह कुत्ता और कोई नहीं था, स्वयं धर्म ही युधिष्ठिर की परीक्षा के लिए उनके साथ हो लिए थे। इस प्रकार युधिष्ठिर की शरणागत वत्सलता को देखकर वे अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गए और युधिष्ठिर को रथ में बिठलाकर स्वार्गादिलोकों को चले। स्वर्ग का अनुपम दृश्य देखकर तथा नारदादि देवर्षियों से अपनी स्तुति

सुनकर भी इन्होंने देवराज इन्द्र से यही कहा कि जहां मेरे भाई बन्धु तथा देवी द्रौपदी हों, वहीं मुझे ले चलिए। धन्य है इनका बन्धु-प्रेम।

देवराज इन्द्र की माया से इन्हें नरक का दृश्य दिखाई दिया। जहां के कराहने और रोने की आवाज सुनी तो वहीं रूक गए और देवदूत से कहा-हम तो यहीं रहेंगे, जब हमारे रहने से यहां के जीवों को सुख मिलता है तो यह नरक ही हमारे लिए स्वर्ग से बढ़कर है। धन्य है उनकी दयालुता।

जब यह माया दूर हुई और वे भगवान के परमधाम में गए जहां उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण के साथ अपने भाइयों और देवी द्रौपदी के भी दर्शन किए। अन्त में वे अपने पिता धर्म के शरीर में प्रविष्ट हो गए।

युधिष्ठिर की पवित्रता का ऐसा अद्‌भुत प्रभाव था कि वे जहां जाते, वहां का वातावरण अत्यन्त पवित्र हो जाता था। अज्ञातवास के समय जब कौरवों ने इनका पता लगाना चाहा तो उस समय भीष्म पितामह ने बतलाया कि राजा युधिष्ठिर जिस नगर या राष्ट्र में होंगे वहां की जनता भी दानशील, प्रियवर्धिनी जितेन्द्रिय और लज्जाशील होगी। जहां वे रहते होंगे, वहां के लोग संयमी, सत्यपरायण तथा धर्म में तत्पर होंगे, उनमें ईर्ष्या, अभिमान, मत्सर आदि दोष नहीं होंगे। वहां हर समय वेद ध्वनि होती होगी, यज्ञ होते होंगे, ठीक समय पर वर्षा होती होगी, वहां की भूमि धन-धान्यपूर्ण तथा सब प्रकार के भयों एवं उपद्रवों से शून्य होगी।

उनके निकट रहने से नरक के प्राणियों तक को सुख शान्ति मिलती थी। राजा नहुष, जो अगस्त्य मुनि के शाप से अजगर की योनि में पड़ा हुआ था, युधिष्ठिर जी के दर्शन और उनके साथ बातचीत करने मात्र से अजगर की योनि से मुक्त हो, पुनः स्वर्ग को प्राप्त हुए। ऐसे पवित्रात्मा युधिष्ठिर के पावन चरित्र का जितना ही मनन किया जाएगा उतनी ही पवित्रता प्राप्त होगी कहा भी है-

धर्मो विवर्धति युधिष्ठिर कीर्तनेन

धर्मराज युधिष्ठिर के गुणों का कीर्तन करने से धर्म-भावना की वृद्धि होती है। अतः धर्मराज युधिष्ठिर के समान हमें भी धर्म का त्याग कभी नहीं करना चाहिए।

.....पृष्ठ 14 का शेष

कलेवर होने से आप के अनुभव उपदेशामृत वाणी पद्य-साखियां जो अद्यावधि भक्त कुल कण्ठ भूषण से कल्याणकारी सामयिक समता-शक्तिप्रदान करने वाली है। आपकी समस्त जीवन्त घटनाओं, स्वभाव, चमत्कारों का चित्रण, सुपच्य विवरण सीमित साधन में यहाँ उद्‌धृत नहीं किया जा सकता, किन्तु स्थाली पुलाक न्याय से यहाँ दर्शन में इतना मात्र लिखना ही उचित होगा कि पीपाजी के प्रभाव-प्रताप सम्पूर्ण जगत के लिये घृत के समान शक्तिप्रद सर्वहितकारी उदाहरण समसामयिक, भक्त अनुकरणीय, शैक्षणिक, उपदेशक है। आप के मन में संसार की वासनाऐं कदापि नहीं थीं। मायामय जग में आपका निवास नहीं था। आप दिव्य जगत के उत्तम संस्कारवान, दिव्यपुरुष, युगावतारी थे कि आप के दिव्य प्रभाव की गन्ध से आज भी जगत सुवासित है।

आप सतगुरु चरण शरण के आश्रय से अति प्रेमा भक्ति के अन्तिम छोर के प्रहरी बने, गुरु कृपा एवं अति अनन्या भक्ति के प्रभाव से असंख्य अमूल्य सद्‌गुणों का प्रादुर्भाव हुआ कि समस्त सन्त श्रेणी में कण्ठभूषण की भाँति शोभासमान हुए। सात्विक गुण गण में, भक्ति-भक्त भागवत और गुरुभक्ति की ऐसी आराधना की कि उसका स्पर्श दर्शन श्रवण मनन करके सम्पूर्ण श्री वैष्णवों के आराधना का इतिहास गौरवान्वित हो गया। आपने अपने भक्ति प्रभाव, काव्यामृत उपदेश तथा चारित्रिक महत्त्व से सम्पूर्ण विश्व को कल्याण भाजन बनाया। प्रमाण में प्रत्यक्ष मान्य है कि सूँध-सेन्ध लगाकर मानव भक्षक परम हिंसक वनराज सिंह को भी उपदेश देकर अपना भक्त-शिष्यत्व संस्कार दिया और वह पुनर्जन्म में आकर नरसी मेहता के रूप में अवतरित होकर आपके उपदेश से विरक्त शिरोमणि छप्पन करोड़ की सम्पत्ति सन्त सेवा लूटा कर सांवलशाह को अपना गुमास्ता, कार्याध्यक्ष बना दिया और भक्त भावन प्रभु की भक्ति में कीर्तन करके शिव प्रसाद केदारा राग का इतिहास अमर कर दिया। आपका वि.सं. 1441 चैत्र शुक्ल पूर्णिमा ता. 9 अप्रैल 1384 ई. को साकेतवास हुआ, जो आज भी पीपाजी का दर्शनीय समाधि स्थल गांगरोन में है।

श्रीमहन्त उत्तम आश्रम, कामामार्ग, जोधपुर-6

जम्मू कश्मीर में हिन्दुओं पर सरकारी दमन चक्र - एक चुनौती

- **श्री करूणा प्रकाश**, क्षेत्रिय संगठन मंत्री, उत्तर क्षेत्र, विहिप

पिछले सात-आठ महीनों से जम्मू-कश्मीर के अलग-अलग स्थानों पर जाने के बाद मुझे वहाँ के हिन्दू समाज को जिस विकट परिस्थिति से गुजरना पड़ रहा है मुझे लगा शेष भारत के हिन्दू समाज को यह अवगत कराना बहुत आवश्यक है।

जम्मू-कश्मीर प्रांत के हिन्दू समाज अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा के लिए सदैव संघर्षशील रहते है, लेकिन कुछ सालों से सरकार द्वारा प्रशासन के सहारे हर प्रकार से वहाँ के हिन्दू समाज को दबाने का, आस्था पर चोट पहुंचाने का, हिन्दू बहुल क्षेत्रों में सरकारी योजना से सरकारी जमीन (वन विभाग की जमीन) पर मुस्लिम आबादी बढ़ाने का षडयंत्र, मंदिर के पैसों को हड़पने का प्रयास, गौ तस्करी को संरक्षण देने के प्रयासों से यह प्रतीत होता है कि वहाँ की सरकार बहुत सुनियोजित तरीके से हिन्दुओं पर दमन चक्र चला रही है।

हमने सुना है कि इस देश में विधर्मी मंदिरों को लूटते थे। वर्तमान में वहाँ की सरकार भी यह काम कर रही है। कोई भी हिन्दू मंदिर जहाँ चढ़ावा चढ़ता है वहाँ की धनराशि वहाँ के डी.सी. ले जाते हैं और वह धनराशि कहाँ खर्च होती है यह जानकारी नहीं है। परन्तु यह निश्चित है कि वह धनराशि मंदिर के लिए या मंदिर परिसर के लिए या आने-जाने वाले यात्रियों के सुविधा में खर्च नहीं होता है। केवल माता वैष्णों देवी श्राईन बोर्ड की बात छोड़कर।

पुंछ में बाबा बूढ़ा अमरनाथ यात्रा प्रारम्भ होने के बाद वहाँ देशभर से लाखों भक्त आने लगे तभी से प्रशासन का ध्यान मंदिर के प्रणामी/चढ़ावा के ऊपर गया और वहाँ की भी राशि डीसी अपने कब्जे में कर लिया है। ऐसा ही जम्मू शहर से कुछ दूर पर पाकिस्तान सीमा के निकट झिड़ी गांव में **बुआ दाती जितो बाबा की समाधि** (मंदिर) पर सरकारी कब्जा करने का प्रयास किया गया। मंदिर के प्रबन्धकों के कोर्ट में जाने से स्टे लग गया पर गुल्लक की राशि वहाँ के डीसी ने अपने कब्जे में कर लिया है साथ ही मंदिर में विकास कार्य चल रहा था वह भी रूकवा दिया है।

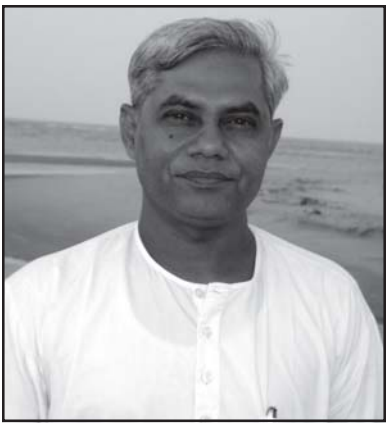

ऐसे ही और भी बहुत सारी मंदिर की सम्पत्ति पर सरकार की कुदृष्टि है जैसी मचेल देवी की यात्रा चलती है। दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में चन्द्रभागा नदी के किनारे से यह यात्रा मार्ग अत्यन्त खराब है और इसके प्रति सरकार का ध्यान नहीं है। पंजाब, जम्मू कश्मीर के लाखों भक्त इस यात्रा में पैदल चलते हैं। किश्तवाड़ से आगे पहाड़ों पर 30 किमी दूर यहाँ मचेल देवी स्थित हैं। यहाँ श्रृद्धालुओं द्वारा चढ़ाई गयी धनराशि पर प्रशासन की नजर है।

दूसरी ओर कश्मीर घाटी के सभी मंदिरों पर कब्जा करने के लिए कश्मीर हिन्दू श्राईन बोर्ड बनाकर एक तो सभी मंदिरों पर सरकारी नियंत्रण और दूसरी ओर कश्मीरी हिन्दू और बाकी हिन्दुओं में फूट डालने का सरकार द्वारा षड़यंत्र के कारण हिन्दू समाज पीड़ित है।

यह तो हुआ मंदिरों की दशा - और एक षड़यंत्र के द्वारा हिन्दू समाज आस्था और मानबिन्दुओं पर गंभीर चोट पहुंचाने का प्रयास हो रहा वह गौ तश्करी और गौहत्या की घटना से। जम्मू, कठुआ, रामवन, सुन्दरवनी, अखनूर, राजौरी सहित सम्पूर्ण प्रांत में दिन प्रतिदिन ऐसी घटना की जानकारी प्रांत के सभी जगहों पर मिलती रहती है। स्थानीय हिन्दू समाज इस प्रकार की घटना की जानकारी मिलते ही गौमाता को या गौवंश को बचाने में एक जुट तो हो जाते हैं पर अनुभव में ऐसा हर बार आता है कि गौ तश्करी में पुलिस और प्रशासन मिले हुए हैं। जबकि जम्मू-कश्मीर में गौकशी पर पाबन्दी है। फिर भी गौहत्या को रोकने के कारण अनेकों कार्यकर्ता पर केस दर्ज हुआ है।

तीसरा एक षड़यंत्र के द्वारा जम्मू जैसी हिन्दू बहुल क्षेत्र को बहुत तेजी से संवेदनशील क्षेत्र बनाने का प्रयास किया जा रहा है। जम्मू शहर के चारो तरफ जो वन विभाग के भूमि हैं उस पर घाटी से आये हुए मुस्लिमों ने कब्जा करके रहना शुरू किया है और लगातार संख्या बढ़ रही है। वन विभाग की जमीन को कब्जा करना गैर कानूनी है पर सरकारी संरक्षण में जमीन पर लगातार कब्जा करके जम्मू की हालत घाटी जैसी स्थिति निर्माण का गहन षड़यंत्र चल रहा है। हम सभी को पता है कि 2008 के आन्दोलन के दौरान अमरनाथ यात्रियों के लिये बालटाल में वन विभाग जमीन श्राईन बोर्ड को देने से सरकार ने मना किया था जबकि यह भूमि अस्थायी रूप से केवल यात्रा अवधि में उपयोग होता है, और इसके लिए अमरनाथ श्राईन बोर्ड सरकार को लाखों रूपये भी देना होता है। दूसरी ओर वर्तमान में वन विभाग एवं सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा जमा के जनसंख्या के अनुपात को बढ़ाने में लगे हैं।

चौथा एक षड़यंत्र जो बहुत पहले से चल रहा है लेकिन आज बहुत तेजी से चल रहा है वह है लव-जिहाद। हिन्दू माता-बहनों पर कुदृष्टि से देखना और मौका मिलते ही अपहरण करके ले जाना। प्रेम जाल में फंसाकर ले जाना ऐसी घटना आम हो गयी है। पुलिस प्रशासन से हिन्दुओं को मदद नही मिलती। हिन्दुओं को कोर्ट के शरण में जाना पड़ता है। परन्तु हमें पता है कोर्ट की प्रक्रिया लम्बित होने के कारण ज्यादातर घटना में ऐसे माता बहनों को बचाना ही सम्भव नही हो पाता है। ऐसे बहुत सारी घटना सामाजिक संगठन के पास आती रहती है।

डोडा, किश्तवाड, भद्रवाह जैसे स्थान जहाँ केवल 20 प्रतिशत ही हिन्दू आबादी है और आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र है, इन सब स्थानों पर ऐसी बहुत सारी घटनाओं की जानकारी मिली। यहाँ के हिन्दू बहुत ही साहसी और संघर्षशील हैं, और यह स्वाभाविक ही है कि जम्मू कश्मीर में जन्मे प्रत्येक हिन्दुओं को संघर्षशील होना ही पड़ेगा। अपनी आस्था मानबिन्दुओं की रक्षा के लिए जम्मू-कश्मीर के हिन्दू समाज सरकारी दमनचक्र से भयभीत नहीं अपितु उन्होंने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। ❑

138 लोग स्वधर्म में लौटे

श्री काकुलम जिले के सीतमपेट एवं बुर्ज मण्डल के 18 ग्रामों के 30 परिवारों के 138 सदस्यों ने ईसाइयत को त्याग कर 4 मई को अपने पूर्वधर्म में वापस लौटे। परावर्तन के अवसर पर विहिप द्वारा यज्ञ-हवन का आयोजन किया गया। जिसमें निकटवर्ती ग्रामों से 5 सौ से अधिक सबरा जनजाति के लोग उपस्थित थे।

केन्द्रीय मंत्री श्री जुगल किशोर ने उनको सम्बोधित किया। विहिप के जिला के अध्यक्ष श्री श्रीनिवास राव, जिला मंत्री श्री नरसिंह मूर्ति, विभाग प्रमुख श्री जगदीश्वर राव, प्रान्त सह संगठन मंत्री श्री संजीवैय्या ने भी सम्बोधित किया।

परावर्तितों का भगवान श्री राम का चित्र एवं नये वस्त्रों से स्वागत किया गया। सभी लोगों ने सामूहिक भोजन किया। सम्पूर्ण व्यवस्था श्री सर्वरानन्द, तिरूपति तथा भास्कर राव देख रहे थे। ❑

संकट में है आज वो धरती, जिस पर तूने जनम लिया
पूरा कर दे आज वचन वो, जो गीता में जो तूने दिया
तुम बिन कोई नहीं है मोहन, भारत का रखवाला रे
बड़ी देर भई नंदलाला

वसुदेव-सुतं देवं कंस-चाणूर-मर्दनम्।
देवकी-परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

प्रेषक : **गिरीश जुयाल**
राष्ट्रीय संगठन संयोजक मुस्लिम राष्ट्रीय मंच
मुख्य सम्पादक **पैगाम मादरे वतन**

फारूख और उमर अब्दुल्ला के भविष्य की राजनीति के संकेत

-डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

साधरणतया चुनाव के दिनों में नेता जो बोलते और कहते हैं, उसे ज्यादा गंभीरता से नहीं लेना चाहिये। क्योंकि उन्हें बहुत सी बातें अपनी राजनैतिक विवशता के कारण कहनी पड़ती हैं। परन्तु इस के बावजूद किसी भी पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं के भाषणों और उनकी बातों के प्रत्यक्ष और परोक्ष अर्थों को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। अनेक बार उनके ये भाषण प्रत्यक्ष रुप से उस पार्टी की मूल विचारधारा, कार्यनीति और व्यवहार को भी इंगित करते हैं। इस पृष्ठभूमि में सोनिया गान्धी की पार्टी और केन्द्र में सत्ता सुख भोग रहे फारूख अब्दुल्ला और जम्मू कश्मीर में मुख्यमंत्री उनके सुपुत्र उमर अब्दुल्ला के हाल ही में दिये गये भाषणों और उनके उद्‌गारों का विश्लेषण करना आवश्यक है।

भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में कहा है कि वह संघीय संविधान के अनुच्छेद 370 के मामले में सभी से बातचीत करेगी और पार्टी इस अनुच्छेद को समाप्त करने की अपनी बचनबद्धता दोहराती है। पार्टी के प्रधान राजनाथ सिंह ने यह भी कहा कि इस बात पर सार्वजनिक बहस होनी चाहिये कि इस अनुच्छेद से राज्य के लोगों को लाभ हो रहा है या हानि। हो सकता है कि इस अनुच्छेद से लाभ केवल अब्दुल्ला परिवार और उनके गिने चुनें व्यवसायिक मित्रों को हो रहा हो और वे उसको बरकरार रखने के लिये जम्मू कश्मीर के लोगों की आड़ ले रहे हों। वैसे भी जहाँ तक राज्य की आम जनता का सम्बंध है, वह तो इस अनुच्छेद के कारण पैदा हुए भेदभाव की चक्की में बुरी तरह पिस रही है। जो मौलिक अधिकार देश के सभी नागरिकों को मिले हुए हैं, उनसे राज्य की जनता को वंचित रखा जा रहा है। वे सभी अधिकार और सुविधाएँ, जो अन्य सभी को, विशेष कर दलित और पिछड़े वर्गों को मिलती हैं, जम्मू कश्मीर में नहीं मिल रहीं। ऐसा नहीं कि फारूक और उमर, दोनों बाप बेटा अनुच्छेद 370 के कारण राज्य की आम जनता को हो रहे नुकसान को जानते न हों। लेकिन इसके बावजूद वे अड़े हुए हैं कि इसकी रक्षा के लिये अपना सब कुछ दाँव पर लगाने को तैयार हैं। राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला तो और भी दो कदम आगे निकल गये। उन का कहना है कि लोकसभा में कोई पार्टी चाहे कितनी भी सीटें क्यों न जीत ले, लेकिन वह अनुच्छेद 370 को हाथ नहीं लगा सकती। यदि कोई सरकार अनुच्छेद 370 को समाप्त करने के लिये संवैधानिक विधि का प्रयोग भी करती है तो उन्हें (अब्दुल्ला परिवार को) इस बात पर नये सिरे से विचार करना होगा कि जम्मू कश्मीर भारत का हिस्सा रहे या न रहे। उधर उनके पिता श्री दहाड़ रहे हैं कि जब तक मेरे शरीर में रक्त की अन्तिम बूंद है, तब तक मैं अनुच्छेद 370 को समाप्त नहीं होने दूँगा । उन्होंने धमकी तक दी कि जब तक नेशनल कान्फ्रेंस का एक भी कार्यकर्ता जिन्दा है तब तक अनुच्छेद 370 की ओर कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता। वैसे तो फारूक अब्दुल्ला केन्द्रीय सरकार में मंत्री हैं, लेकिन जैसे ही वे बनिहाल सुरंग पार कर घाटी में प्रवेश करते हैं तो उन की भाषा धमकियों की हो जाती है और धमकियाँ भी वे चीन और पाकिस्तान को देने की बजाय, जो राज्य के दो हिस्सों गिलगित और बल्तीस्तान के लोगों, विशेषकर शिया समाज, का दमन कर रहा है, को न देकर भारत को ही देने लगते हैं। उनका मानना है कि लोक सभा चुनावों में नरेन्द्र मोदी का समर्थन करने का अर्थ होगा, अनुच्छेद 370 को समाप्त करने का समर्थन करना। इसलिये वे पूरी घाटी में लोगों को ललकारते घूम रहे हैं कि लोग मोदी का समर्थन न करें। अपनी बात लोगों में रखने का अब्दुल्ला परिवार को लोकतांत्रिक अधिकार है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। अपनी पार्टी नेशनल कान्फ्रेंस की नीतियाँ जनता को बताने और उस आधार पर समर्थन माँगना भी उनका लोकतांत्रिक अधिकार है। लेकिन चुनाव परिणामों के आधार पर यह कहना कि जम्मू कश्मीर देश का हिस्सा नहीं रहेगा, देशद्रोह ही नहीं बल्कि देश के शत्रुओं का परोक्ष समर्थन करना ही कहा जायेगा।

इस बार चुनावों में राज्य की आम जनता ही अनुच्छेद 370 को लेकर अब्दुल्ला परिवार से प्रश्न पूछ रही है।

घाटी के गुज्जर-बकरवाल, बल्ती, शिया और जनजाति समाज तो इस मामले में बहुत ज्यादा मुखर है। ये सभी पूछ रहे हैं साठ साल में इस अनुच्छेद से उन्हें क्या लाभ मिला? जनता के इन प्रश्नों का अब्दुल्ला परिवार के पास कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है। अब वे सार्वजनिक रुप से यह तो कह नहीं सकते कि आपको लाभ हुआ हो या न हुआ हो, लेकिन हमारे परिवार और हमारे व्यवसायिक दोस्तों को तो बहुत लाभ हुआ है। जनता को कोई संतोषजनक उत्तर न दे पाने के कारण ही बाप बेटा धमकियों पर उतर आये हैं। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला तो धमकियाँ देते काफी दूर निकल गये। उन्होंने कहा यदि मोदी सत्ता में आते हैं तो उनको समर्थन देने की बजाय मेरे लिये पाकिस्तान चले जाना ही श्रेयस्कर रहेगा। अपने इस निश्चय को दृढ़ करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि पाकिस्तान जाने के लिये अब उन्हें दिल्ली जाने की भी जरुरत नहीं है। घाटी में ही दूसरी ओर मुज्जफराबाद जाने के लिये बस मिल जाती है और वे उसी से सरहद पार कर जायेंगे। इससे यह तो स्पष्ट हो ही रहा है कि मुज्जफराबाद तक बस चलवाने के लिये अब्दुल्ला परिवार ने जो कई साल यत्न किया था, उस के पीछे उनकी अपनी भविष्य की योजनाएँ भी एक कारण था। एक संकेत यह भी मिलता है कि आज तक एल.ओ.ए.सी पर उग्रवादियों का सीमा से आवागमन क्यों नहीं रुक सका?

वैसे पाकिस्तान में चले जाने से पहले यदि उमर अब्दुल्ला, उन कश्मीरी भाषी मुसलमानों से जो बार-बार कभी इस बस में और कभी बिना बस के ही , सरहद पार आते जाते रहते हैं, थोड़ा दरयाफ्त कर लेते कि इन की पाकिस्तान के मालिकों ने क्या दुर्दशा की, तो शायद अपना पाकिस्तान जाने की इच्छा जग जाहिर करने से पहले वे सौ बार सोचते। पाकिस्तान चले जाने के प्रश्न पर उमर से ज्यादा समझदारी तो उनके दादा शेख अब्दुल्ला ने ही दिखाई थी। वे समझ गये थे कि सामन्तवादी पाकिस्तान में कश्मीरी भाषी मुसलमानों के लिये सम्मानजनक स्थान नहीं है। जो शिया समाज उस समय गलती से पाकिस्तान में रह गया था, वह भी अब वहाँ के मुसलमानों के हाथों पिटने और प्रताड़ित होने के बाद हिन्दोस्तान की ओर देख रहा है। जम्मू कश्मीर के गिलगित और बल्तीस्तान के लोग पाकिस्तान से मुक्ति के लिये संघर्ष कर रहे हैं। शेख अब्दुल्ला ने अपने जिन मित्रों को जबरदस्ती या धोखे से पाकिस्तान में धकेल दिया था, उनका वहाँ क्या हश्र हुआ, यह सब जानते हैं। परन्तु फारूख और उमर का अनुच्छेद 370 से इतना मोह हो गया है कि वे उसकी गैर हाजिरी में पाकिस्तान की ओर दौड़ रहे हैं। घाटी में खिसकता जनसमर्थन देख कर और वहाँ के लोगों के अनुच्छेद 370 को लेकर पूछे जा रहे तीखे प्रश्नों से घबड़ा कर, यह अब्दुल्ला परिवार का ब्लैकमेल करने का पुराना तरीका ही है या फिर सचमुच ही सरहद के पार जाने की इच्छा तो चुनाव परिणाम आ जाने के बाद ही पता चलेगा। कश्मीर घाटी के लोगों समेत देश के बाकी लोगों की दृष्टि भी इसी पर लगी हुई है। ❑

ग्वालियर में पांच स्थानों पर प्याऊ का लोकार्पण

ग्वालियर। 06 मई, 2014 विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल द्वारा जन सेवा के उद्देश्य से ग्वालियर महानगर में पांच स्थानों पर शीतल जल प्याऊ लगाए। इस अवसर पर मुख्य रूप से विहिप की केन्द्रीय मंत्री श्रीमती मीनाक्षी ताई पिशवे एवं बजरंग दल के प्रदेश संयोजक श्री पप्पू वर्मा, सहज योग साधाना केन्द्र नेहरू पार्क के संरक्षक एवं योगाचार्य श्री गजानन्द दुसे बाड़े के हनुमान मंदिर के पुजारी सुदामा प्रसाद शर्मा प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

शीतल जल प्याऊ नेहरू पार्क कम्पू, महाराज बाड़ा, जनकगंज हनुमान चौराहा, खासगी बाजार, दाल बाजार चौराहा, इन पांच स्थानों पर शीतल जल प्याऊ का लगाये गये। इस अवसर पर श्रीमती मीनाक्षी ताई पिशवे ने कहा जन सेवा ही ईश्वर सेवा है। देशभर में विहिप के द्वारा 63 हजार शिक्षा स्वास्थ्य स्वालम्बन के सेवा कार्य चलते हैं। इस अवसर पर प्रमुख रूप से विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल के प्रांत गऊ रक्षा प्रमुख मनोज गोड़िया, विभाग सह संयोजक विष्णु शर्मा, विहिप उपाधयक्ष हरीश रजक आदि उपस्थित थे।

प्रेषक : **मनोज गोड़िया**
विभाग संयोजक, बजरंग दल

धन्यो गृस्थाश्रमः

-आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरि

शाश्वत-सनातन हमारी देव संस्कृति अपनी अनेकविध विशिष्टताओं के लिए विश्व प्रसिद्ध रही है। विश्व प्रसिद्ध ही क्यों विश्व संस्कृति का पर्याय बन गई है। विश्व गगनांगन में देदीप्यमान, अपनी शीतल चाँदनी से सभी को शान्ति-तुष्टि प्रदान करने वाली यह संस्कृति प्रत्येक क्षेत्र में अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है।

भारतीय संस्कृति की उन अद्‌भुतताओं में एक महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी 'वर्णाश्रम-व्यवस्था' है।

यह 'वर्णाश्रम' व्यवस्था नितान्त वैज्ञानिक और सदुद्देश्यपूर्ण है। आज ये दोनों व्यवस्थाएं अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो पा रही हें, जिसका प्रधान कारण मनःस्थिति और परिस्थिति में परिवर्तन आ जाना है और इसका सबसे बड़ा कारण उसकी वैज्ञानिकता के अन्तरतम तक न पहुँच पाना है-भ्रम-जंजाल में उलझ जाना है।

वस्तुतः 'वर्ण' का आधार जीविका के कार्य थे और 'आश्रम' का आधार आयु थी, परन्तु इन दोनों आधारों के प्रति दृष्टिकोण बदल जाने के कारण अथवा कालान्तराल के कारण उक्त आधारों के स्थान को रूढ़ियों ने जकड़ लिया। विकृति आने का कारण यही था, अन्यथा ऋषि-प्रणीत यह परम्परा (जीविका-कर्मणा वर्णः, वयसा आश्रमः) अत्युत्तम थी।

'आश्रम' परम्परा में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास का जितना सुन्दर क्रम और व्यवस्था थी, वह व्यक्तित्व विकास, परिवार-सुसन्तुलन और समाज समुनायन का दृढ़ आधार खड़ा करती थी। योग्यता-सामर्थ्य के विकास का प्रथम आश्रम था। विकसित-सामर्थ्य के सदुपयोग के लिए दूसरा आश्रम, अर्जित-अनुभव के वितरण के लिए तीसरा आश्रम अैर पर्वतोभावेन अपने को समाजनिष्ठ बना देने का चतुर्थ आश्रम था। वर्तमान में वर्ण और आश्रम दोनों अत्याधिक सीमित हो पाये हैं। आज सभी का ध्यान 'धन' कमाने की ओर है, इसीलिए सभी 'वैश्य' हो गये हैं और सभी केवल अपने परिवार तक ही सीमित हो गये हैं, इसीलिए सभी होश संभालने से अन्तिम साँस तक गृहस्थ ही बने रहते हैं।

वैसे हमारे शास्त्रों में सीमा-मर्यादा में रहने वाले 'गृहस्थों' को सर्वश्रेष्ठ स्वीकार किया गया है, क्योंकि वही अन्य तीनों आश्रमों-ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास का एकमात्र आधार हैं। महाभारत (शान्ति 23.5) में कहा गया है-

वयांसि पशवचैव भूतानि च जनाधिव।
गृहस्थैरेव धार्यन्ते तस्माच्छ्रेष्ठोगृहाश्रमी॥

अर्थात् हे राजन्! पशु-पक्षी और दूसरे प्राणियों को गृहस्थ ही धारण करता है, अतः गृहस्थ अन्यों से श्रेष्ठ है। महात्मा चाणक्य जी ने 'आदर्श गृहस्थ कैसा हो', उसका एक सुन्दर शब्द चित्र खींचते हुए लिखा है कि ऐसी सिंति वाला गृहस्थाश्रम धन्य है-

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता न दुर्शाषिणी,
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषिति रतिश्चाज्ञापराः सेवकाः।
आतिथ्य शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्न पानं गृहे,
साधेः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः॥

-चाणक्य नीति दर्पण 12.1

अर्थात् घर आनन्दप्रद हों, सन्तानें बुद्धिशाली हों, पत्नी प्रिय बोलने वाली हो, सन्मित्र हों, पर्याप्त धन हो, अपनी स्त्री में अनुरक्ति हो, सेवक आज्ञाकारी हो, अतिथि सत्कार होता हो, शिव की आराधना होती हो, घर में मधुर अन्न-पान की व्यवस्था हो तथा सज्जनों का संग हो - ऐसा गृहस्थाश्रम धन्य है।

गृहस्थाश्रम की महनीय महिमा अकारण नहीं है। गृहस्थाश्रम समाज को सुनागरिक देने की खान है। भक्त, ज्ञानी, सन्त, महात्मा, सुधारक, महापुरुष, विद्वान, पंडित गृहस्थाश्रम से निकलकर आते हैं। उनके जन्म से लेकर शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण, ज्ञानसंवर्धन गृहस्थाश्रम के बीच ही होता है। गृहस्थाश्रम ही समाज के संगठन, मानवीय मूल्यों की स्थापना, समाज निष्ठा, भौतिक विकास के

साथ-साथ मनुष्य के आध्यात्मिक विकास का क्षेत्र है। गृहस्थाश्रम ही समाज के व्यवस्थित स्वरूप का मूल आधार है।

आत्मोन्नति का अभ्यास करने के लिए सबसे अच्छा स्थान-आश्रम स्थल अपना घर-परिवार ही है। इसमें मनुष्य अपने प्रतिदिन के स्वार्थों के ऊपर अंकुश लगाता जाता है, आत्म संयम सीखता, स्त्री-पुरुष सम्बन्धी, परिजन आदि में अपनी आत्मीयता बढ़ाता जाता है। यही क्रम धीरे-धीरे आगे बढ़ता जाता है और मनुष्य सम्पूर्ण चर-अचर में , जड़-चेतन में आत्मसत्ता को ही समाया देखता है। उसे परमात्मा की दिव्य ज्योति जगमगाती दिखती है।

परिवार संस्था को लौकिक तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए अतीव उपयोगी माना गया है। पारिवारिक जीवन की परिभाषा करते हुए ऋषियों-मनीषियों ने कहा है-**'परिवार परमात्मा की ओर से स्थापित एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा हम अपना आत्म विकास सहज ही में कर सकते हैं और आत्मा में सतोगुण को परिपुष्ट कर सुख-समृद्ध जीवन प्राप्त कर सकते हैं।'** मानव जीवन की सर्वांगीण सुव्यवस्था के लिए पारिवारिक जीवन प्रथम सोपान है। मनुष्य केवल सेवा, कर्म और साधना में ही पूर्ण शान्ति प्राप्त कर सकता है।

जिस प्रकार परमात्मा और आत्मा में सिवाय बड़े-छोटे के और कोई अन्तर नहीं है, उसी प्रकार समाज और परिवार में कोई अन्तर नहीं है। परिवार को समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाना समाज के उत्थान की एक छोटी प्रक्रिया है। उसको क्रियात्मक रूप देने की प्रयोगशाला परिवार है। यदि हम सब अपने कौशल, ज्ञान और क्षमता का पूरा-पूरा लाभ देकर परिवार के माध्यम से समाज सेवा का उत्तरदायित्व निभाते चलें, तो जल्दी ही वे परिस्थितियाँ विनिर्मित हो सकती हैं-वह सुकाल आ सकता है, जो कभी प्राचीन युग में रहा है।

पुराकालीन 'सुधन्वा' में जो अद्‌भुत शक्ति प्रकट हुई थी, जिसके सहारे उसने भगवान कृष्ण के कृपापात्र अर्जुन को भी पराभूत कर दिया था, मात्र नैष्ठिक गृहस्थ धर्म के पालन की ही थी। हुआ यह कि महाभारत के दौरान दोनों में घमासान युद्ध छिड़ गया। विकरालता बढ़ती ही जा रही थी। निर्णायक स्थिति आ नहीं रही थी। अन्तिम बाजी इस बात पर अड़ी कि फैसला तीन बाणों में ही होगा। या तो इतने में ही किसी का वध हो जायेगा, अन्यथा युद्ध बंद करके दोनों पक्ष पराजय स्वीकार करेंगे। जीवन-मरण का प्रश्न सामने आ खड़े होने पर कृष्ण को भी अर्जुन की सहायता करनी पड़ी। उन्होंने हाथ में जल लेकर संकल्प किया कि 'गोवर्द्धन उठाने और बृज की रक्षा करने के पुण्य को मैं अर्जुन के बाण के साथ जोड़ता हूँ।' आग्नेयास्त्र और भी प्रचण्ड हो गया। काटने का सामान्य उपचार हल्का पड़ रहा था। सो सुन्धवा ने भी संकल्प किया कि 'एक पत्नी व्रत पालने का मेरा पुण्य भी इस अस्त्र के साथ जुड़े।' दोनों के दोनों अस्त्र बीच में काटने के प्रयत्न किए। अर्जुन का अस्त्र कट गया और सुन्धवा का आगे बढ़ा, किन्तु निशाना चूक गया।

दूसरा अस्त्र फिर उठा। अब की बार कृष्ण ने अपना पुण्य उसके साथ जोड़ते हुए कहा-'ग्राह से गज को बचाने और द्रौपदी की लाज बचाने वाला पुण्य अर्जुन के बाण के साथ जुड़ जाए।' दूसरी और सुन्धवा ने भी वैसा ही किया-'मैंने नीतिपूर्वक ही उपार्जन किया है और चरित्र के किसी पक्ष में त्रुटि न आने दी हो, तो वह पुण्य इस अस्त्र के साथ जुड़ जाए।' इस बार भी दोनों अस्त्र आकाश में टकराये और सुन्धवा के बाण से अर्जुन का बाण आकाश में ही कट कर धाराशायी हो गया।

अब केवल तीसरा बाण ही शेष था। इसी पर अन्तिम निर्णय निर्भर था। कृष्ण ने कहा-'मेरे बार-बार अवतार लेकर धरती का भार उतारने का पुण्य अर्जुन के बाण के साथ जुड़े।' दूसरी ओर सुधन्वा ने कहा-'यदि मैंने स्वार्थ का क्षण भी चिन्तन किये बिना मन को निरन्तर परमार्थ में निरत रखा हो, तो मेरा वह पुण्य बाण के साथ जुड़े।'

इस बार भी सुधन्वा का बाण विजयी हुआ। उसने अर्जुन का बाण काट दिया। दोनों में कौन अधिक सामर्थ्यशाली है, इसकी जानकारी देवलोक तक पहुँची, तो सुधन्वा पर आकाश से पुष्प बरसने लगे। युद्ध समाप्त कर दिया गया। भगवान कृष्ण ने सुधन्वा की पीठ ठोकते हुए कहा-**'नर श्रेष्ठ! तुमने सिद्ध कर दिया कि नैष्ठिक गृहस्थ किसी भी तपस्वी से कम नहीं होता।'** ❑

युवकों का वर्तमान धर्म राष्ट्रभक्ति

-डॉ. उषा खोसला

दिव्य मार्गों को धारण करने से अत:करण की शुद्धि होती है और मन भगवान में स्थित होता है। उसी प्रकार राष्ट्र के लिए तन, मन तथा धन से समर्पित होने से चित्त पवित्र बनता है। धर्म का स्वरूप समय के अनुसार परिवर्तित हो जाता है, किन्तु आधार में सनातन सत्य ही विराजमान रहता है। चाहे मन्दिर की दीवार लोहे की बनाओ या शीशे और संगमरमर की। भीतरी प्रतिमा तो शिव सत्य की ओर ही इंगित करती है। उस शिव की प्रसन्नता के लिये कभी उसे गंगाजल से कभी दूध से स्नान कराना आवश्यक होता है तो कभी उसको प्रसन्न करने के लिये हाथों में शस्त्र उठाने की भी आवश्यकता पड़ जाती है। यह निर्णय समय के अनुसार करना पड़ता है। यदि भूखे को अन्न देने के स्थान पर गायत्री मंत्र का जाप करना सिखाने से कोई लाभ नहीं होगा। उसको अन्न देना ही धर्म है। रोगी को तो औषधि ही चाहिये, यही उसकी आवश्यकता है, यही धर्म है। यदि उसे वस्त्र दे दिया औषधि मिली नहीं तो वह बचेगा क्या? यह तो धर्म के स्थान पर अधर्म हो गया। कभी अन्न दान धर्म है तो कभी विद्या दान। कभी औषधि दान धर्म है तो कभी राष्ट्र की समस्याओं का समाधान करके राष्ट्र के लिये तन, मन तथा धन अर्पित करना धर्म है। इससे अंत:करण की शुद्धि भी होगी एवं परम आनंद तथा मोक्ष का अधिकारी बना जा सकता है। इस समय राष्ट्र ही राष्ट्रवासियों का भगवान राम तथा कृष्ण है। यही शंकर तथा माँ दुर्गा है। इसलिये इस समय राष्ट्र धर्म का पालन करना ही समस्त आपदा-विपत्ति से निवृत्ति का मार्ग है।

सनातन धर्म में क्रिया का कोई भी मूल्य नहीं है। भीतरी ईच्छायें ठीक हो जाये तो मन राष्ट्र को भगवान स्वीकार कर लेगा। हमारे समस्त कर्म राष्ट्र के लिये अर्पित हो जाये तो जीवन स्वयं ही निष्काम होकर ब्रह्म से एकीकार हो जायेगा एवं प्रत्येक मनुष्य राष्ट्र में ही भगवान के दर्शन करने लगेगा। राष्ट्र की समस्या इसके नागरिकों की व्यक्तिगत समस्या बन जायेगी। इनके निवारण हेतु युवा पीढ़ी जुट जायेगी। जब भारत को भारत माता ही स्वीकार कर लिया तो इस माता के कष्टों का निवारण कौन करेगा? भारत माता पापों, संतापों के बोझ से दबी जा रही है। कहीं भ्रष्टाचार, कहीं हिंसा और अत्याचार, कहीं आतंकवाद तो कहीं धर्मांतरण, शिक्षा और स्वास्थ्य का अभाव। स्थान-स्थान पर गौ हत्या हो रही है। भारतवासी कब तक असुरक्षित रहेंगे। अपने ही राष्ट्र में रहकर भयभीत हैं। युवकों को भगवान ने बाहुबल, बुद्धिबल तथा आत्म बल दिया है। इसको पहचानकर माँ के अश्रुओं को पोंछ डालें।

आज इस आध्यात्मिक राष्ट्र को हड़पने के लिये विरोधी एवं विदेशी-शक्तियाँ तरह-तरह के उपाय अपना रही है। केवल मैं और मेरा परिवार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र अपना परिवार है, इस भाव को जगाना होगा अत: उठो, जागो और भीतरी चेतना को जगाओ। युवा सब कुछ कर सकते हैं अत: अपनी मोह निद्रा को त्यागो। हुतात्माओं, वीरों और राष्ट्रप्रेमियों की कहानियों को दोहराओ। भारतवर्ष में धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार ने कैसे अपने पैर जमाये। ठीक उसी प्रकार की चालें आज फिर विरोधी शक्तियाँ चल रही हैं। एक बार उनको पैर रखने का स्थान मिल गया तो वे देश में स्थान-स्थान पर प्रवेश कर जायेंगे। अत: जागृत होकर उनके प्रवेश का मार्ग बंद कर डालो। यह प्रखर राष्ट्रभक्ति से ही सम्भव है।

हैवर्ड, सी.ए. 94544, यू.एस.ए.

राष्ट्र किसी भूखण्ड मात्र को नहीं कहते। संस्कृति, सभ्यता, भाषा, इतिहास और वहाँ की परम्परा इन सबका सवाविष्ट समायोजन ही राष्ट्र पदवाच्य हो सकता है। भूखण्ड तो केवल उसका आधार मात्र है। जिस भूखण्ड में वहाँ के निवासियों की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, इतिहास एवं परम्परा की रक्षा हो अर्थात् जिस स्थान विशेष में इन पांच वस्तुओं की सुरक्षा हो, तो हम कह सकते हैं कि वह राष्ट्र सुरक्षित है।

श्री शिवकुमार गोयल

75 वर्षीय पत्रकार, लेखक, चिन्तक, साहित्कार श्री शिवकुमार गोयल का जन्म पिलखुवा के संत साहित्स के लेख आध्यात्मिक क्षेत्र के सुपरिचित स्वमानधन्य भक्तराम शरण दास जी के यहाँ 31 अक्टूबर, 1938 को हुआ था।

कुछ दिनों की अस्वस्थता के कारण 20 अप्रैल को हृदयाघात होने के पश्चात् कुछ दिनों गाजियाबाद के **यशोदा अस्पताल** में भी रहे किन्तु स्वास्थ में सुधार नहीं हुआ और इस संसार की माया-ममता त्यागकर 29 अप्रैल की प्रातः उनका निधन हो गया।

सर्वप्रथम उनकी रचना 17 वर्ष की आयु में प्रकाशित हुई और तब से जो लिखना प्रारम्भ हुआ वह अनथक अंत तक चलता रहा। देश में प्रकाशित होनेवाली सभी पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख छपते रहे।

1962 में चीनी आक्रमण के समय बलिदानी सैनिकों पर लिखी प्रथम पुस्तक **हिमालय के प्रहरी** 1963 में प्रकाशित हुई, इस पुस्तक की भूमिका राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखी थी। इसका 2013 में पुनः प्रकाशन हुआ है।

1967 में हिन्दुस्थान समाचार संवाद समिति के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। 1968 में संसद की कार्यवाही की रिर्पोटिंग प्रारम्भ किया।

आकाशवाणी, दुरदर्शन से संवाद समीक्षा, सामयिकी तथा साक्षातकार भी प्रकाशित होते रहे हैं। संदर्भ ग्रंथ हिन्दुस्थान वार्षिक तथा फीचर सेवा युगवार्ता का सम्पादन उन्होंने अनेक वर्षों तक किया।

- कुशल सम्पादन हेतु उन्हें स्वर्णपदक से अलंकृत किया गया।
- भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार राष्ट्रसेवा सम्मान कोलकाता की बड़ाबाजार लाइब्रेरी द्वारा प्रदान किया गया।
- केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का वर्ष 2001 के लिए श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान से राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अबदुल कलाम ने अलंकृत किया।

5-6 मास पूर्व शिवकुमार जी गोयल का अमृत महोत्सव सम्पन्न हुआ था जिसमें अनेकों लेखक, साहित्यकार, उनके प्रशंसक एवं समाजसेवी उपस्थित थे।

परम्परा से प्राप्त धार्मिकता, संतों एवं श्रेष्ठजनों का सम्मान, विनम्रता के साथ वे विनम्र मृदुभाषी एवं सरल प्रकृति के थे।

हिन्दू चेतना पत्रिका के लिए सदैव उचित सामग्री, समाचार, लेख, समीक्षार्थ नवीन पुस्तकें भिजवाते रहते थे।

ऐसे कर्मयोगी को विनम्र श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। उनके स्वजनों सहित प्रिय अनिल और धर्मेन्द्र को संवेदना प्रकट करते हुए।

+++

स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता **श्री सुरेन्द्रनाथ अग्रवाल** का जन्म 1928 सन् के 15 नवम्बर को हुआ था। श्री सुरेन्द्रनाथ जी संघ के निष्ठावान एवं दायित्ववान स्वयंसेवक थे ही एवं परिवार के सभी लोगों को संघ से जोड़ा। उनके सुपुत्र श्री आलोक कुमार जी दिल्ली विधान सभा के उपाध्यक्ष थे। देहदान के लिए लोगों को प्रेरित कर उनसे देहदान का संकल्प करवाते रहते थे। जीवनभर समाज सेवा करते हुए मरणोपरान्त यह शरीर भी समाज के काम में आये यही विचार कर स्वयं भी अ.भा. आयु. संस्थान को देहदान एवं गुरू तेग बहादुर नेत्र चिकित्सालय को नेत्रदान का संकल्प कर उसे पूर्ण किया।

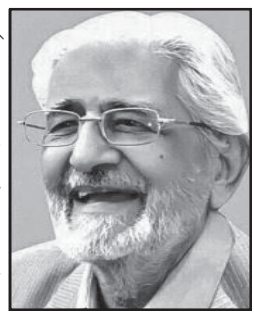

26 अप्रैल को ऐसे त्यागी, तपस्वी कार्यकर्ता के निधन पर संघ एवं विहिप ने हार्दिक संवेदना व्यक्त की। हिन्दू चेतना पत्रिका भी सश्रद्ध श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।

॥ॐ शान्तिः शन्तिः शान्ति॥